सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - व्रज परिक्रमा

VIBRANT PUSHTI

" जय श्री कृष्ण "

" गृह सेवा "
यह कैसा सत्य है!
हमारे पूर्वजों के पूर्वजों के पूर्वजों ने ब्रह्मसंबंध करके अपने घर श्री वल्लभाचार्य जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर गृह सेवा का आरंभ किया 🙏
ब्रह्मसंबंध - अनोखा सिद्धांत
गृह सेवा - अनोखा सिद्धांत
भक्ति में लीन होना - सिद्धांत
जीव - आनंदी
जन्म - आनंदी
संसार - आनंदी
जीवन - आनंदी
धर्म - आनंदी
कर्म - आनंदी
परंपरा - आनंदी
घर ही हवेली - घर ही मंदिर
तो क्यूं जाना कहीं ओर!
तो क्यूं हमारे श्री प्रभु हमारे आंगन पधारे?
हमारे यहां इसलिए पधारे 🌷
ब्रह्मसंबंध किया 🙏
भक्ति मंत्र दिया 🌷
आत्मा परमात्मा का एकात्म 🙏
हमारे नैनों में बसे
हमारे अधरों पर रमे
हमारे कर्णो में गूंजे
हमारे तन में नाचें
हमारे मन में स्थिरे
हमारे धन में बिखरे
हमारे ....
यही तो है सांझ सवेरा
दूर हो सदा अंधेरा 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बचपन - एक उम्र

स्नातक - एक उम्र

माता-पिता का त्याग - जीवन की शुरुआत

लग्न - जीवनसाथी

माता - एक जीवन आधार संस्कार

पिता - एक अंकुश जीवन सिद्धांत

पुत्र - एक वंश

पुत्री - एक अखंड धारा

युवा - एक उम्र

पुरुषार्थ - एक उम्र

एक - एकांत

अकेले - मनन चिंतन

बिलकुल अकेले - पुत्र पुत्री आश्रय

अकेले - जीवन आश्रम यज्ञ

बस अकेले - अंतिम यज्ञ

बस - जाना दूर कहीं दूर कहीं दूर - सब छोड़ 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठहर जाइयेगा ठहर जाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

नहीं जा पाइयेगा नहीं जा पाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

नैनों में बसे हो

मन में छूपे हो

अधर पर रटें हो

नज़र पर फिरते हो

कहीं नहीं जा सकते हो

यहीं ही ठहरे हो

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

प्रीत की कैसी असर है

विरह की कैसी अगन है

सांसों में घुल-मिले हो

दिल से दिल जुड़े हों

नहीं जाइयेगा ठहर जाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मान्यता - परंपरा और विज्ञान यह ऐसा विश्वास - श्रद्धा और आस्था है कि मनुष्य अपने आपको इससे धारण करता है - अपनाता है और खुद को लुटा देता है 🙏

समय - जीवनशैली - परिस्थिति में मान्यता, परंपरा और विज्ञान को समझता, अनुभव करता और करवाता जीवन कृतार्थ करता रहता है 🙏

कोई अलग मान्यता, परंपरा और विज्ञान को देखते मनुष्य अचंभित रह कर वह अपनी स्वीकृति को वह बदलता है और यह बदलाव ही समय परिवर्तन की परिभाषा हो जाती है 🙏

यह समय धारा बहते बहते मनुष्य, मनुष्य जीवन और मान्यता, परंपरा और विज्ञान को बदल बदल कर परिवर्तन परिवर्तन और परिवर्तन 🙏

बस! जीवन जीवन और जीवन समाप्त और गति करने का मार्ग प्रस्थान 🙏

जिसमें हम जीते जीते उपलब्धि, उपाधि को पा कर जो परिवर्तन धारा को बहाते है वह धारा को अपनाने के लिए सिद्धांत, नियम, प्रथा आदि को शिक्षित करके एक नई मान्यता, परंपरा और विज्ञान प्रकाशित करते है 🙏

बस! यही सत्य, यही विश्वास और यही धर्म 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसी रीत है और कैसी जीत है

जो हारे वह पाये

जो जीते वह गंवाए

सीता भी यहां बदनाम हुई

मीरा भी यहां भटकती रही

राधा भी यहां तड़पती रही

वैसे

राम भी ऐसे अकेले जीये

कृष्ण भी ऐसे झझुमते रहे

तो भी

सीता धरती में समा गई

मीरा द्वारकाधीश में लीन हो गई

है रीत जगत की है ऐसी

जो आत्मा से परमात्मा

और परमात्मा से आत्मा विलीन जाएं

न कोई तन से मिला

न कोई धन से मिला

जिन्हें केवल प्रेम पाया

जिन्हें केवल प्रीत प्रजवल्लि

यही सत्य है यही प्रेम पूजा है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

मिलन - नैनों से

न जान न पहचान न जात न पात

पहुंचते है मंदिर

तो मिलते है नैन

तो होते है दर्शन

दर्शन से जागता है प्रेम

प्रेम से है करुणा

न जान न पहचान न जात न पात

कैसा मधुर मनन

कैसा मधुर चिंतन

कैसा मधुर चितवन

आत्मा परमात्मा से मिलन

मिलन से है वरण

न जान न पहचान न जात न पात

" दर्शन " 🌷🙏🌷

हे प्रभु! निकट निकट तु श्याम

हे प्रभु! रटत रटत तु सखी प्रेम

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कितना मधुर दर्शन 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज एक जिज्ञासु मित्र ने प्रश्न पूछा

श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी क्यूं बने?

वार्ता में सैद्धांतिक अर्थ होना आवश्यक है 🙏

यह प्रश्न का उत्तर अनेकों मन, विचार, सत्संग और स्व आध्यात्मिक शैक्षणिक योग्यता से अपने स्व मनन और चिंतन से रजुआत करे तो अच्छा सत्संग हो सकता है 🙏

" जहां अज्ञानता होती है वहां धर्म का ढोल अधिक पीटा जाता है " 🌷🙏🌷

हम स्नातक होते हुए सत्य से वंचित हो कर मान्यता और अंधश्रद्धा के चक्रव्यूह में फस कर अपने आपको महान, आध्यात्मवादी और धर्म उपासक समझते खुद को, कुटुंब को, समाज को बरबाद करते रहते है 🙏

हम कैसे शिक्षित और ज्ञानी है! 🙏

विख्यात सत्य द्रष्टा - श्री अखा और श्री कबीर ने सत्य का आचरण किया 🙏

" पत्थर पूजे देव - जल देख करे स्नान "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कैसे हो वंश उत्तम 🙏 कैसे हो कुटुंब उत्थान 🙏

कैसे हो समाज विश्वासयुक्त 🙏

कब छूटेगा एक दूसरे को लुटना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर हां दूर
दूर कहीं दूर
नहीं सामने इसलिए दूर
नहीं नैनों में इसलिए दूर
नहीं ख्यालों में इसलिए दूर
नहीं यादों में इसलिए दूर
नहीं फोटो फ्रेम में इसलिए दूर
नहीं संसार में इसलिए दूर
नहीं रंग में इसलिए दूर
नहीं स्वर में इसलिए दूर
नहीं स्पर्श में इसलिए दूर
नहीं नज़र में इसलिए दूर
सच कहना! यह दूर है?
सच समझना! यह दूर है?
नहीं! बिलकुल नहीं!
दूर कौन है!
जो नि:संदेह नहीं
जो नि:स्वार्थ नहीं
जो निडर नहीं
जो निश्चित नहीं
जो विश्वास नहीं
जो श्रद्धालु नहीं
जो करुणा नहीं
जो धर्मी नहीं
जो सत्य नहीं
जो भक्त नहीं
जो प्रेमी नहीं
जो विरही नहीं
वह दूर है 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा

कितना खेल रचाएं नजर आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

पलकें बंध कराएं किवाड़ बंध कराएं

दीवारें खड़ी बंधाएं अंधेरे कोटड़ी बिठाइए

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

मन कहीं भटकाइएं तन कहीं तोडाइएं

जीवन कहीं छूपाइएं धन कहीं ललचाएं

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

कितना खेल रचाएं नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

यह ऐसा रंग है यह ऐसा सत्संग है

जो पंकजे दिल खिलता है

जो श्री वल्लभ शरण पाता है

पुष्टि रंग रंगाएं व्रज रज पाइयेगा

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं बदलता जाता हूं

मेरे विचार से

मेरी परिस्थितियों से

मेरे संग से

मेरी शिक्षा से

मेरे मन से

मेरी योग्यता से

मेरे धन से

मेरी अपेक्षा से

मेरे रंग से

मेरी विश्वास नियति से

मेरे अपनायें से

मेरी धारणा से

मेरे स्वीकार्य से

मेरी क्षमता से

मेरे धर्म से

मेरी मर्जी से

मेरे अहसास से

मेरी वासना से

मेरे अहंकार से

मेरी वारसाई से

मेरे ज्ञान से

मेरी द्रष्टि से

मेरे ध्यान से

मेरी श्रद्धा से

मेरे कर्म से

मेरी करुणा से

मेरे सत्य से

मेरी अंधश्रद्धा से

मेरे वचन से

मेरी मूल्यांकन से

मेरे स्वार्थ से

मेरी घृणा से

मेरे कथन से

मेरी द्रढता से

मेरे रोग से

मेरी प्रीत से

और

हम कोई और को निश्चित बनाएं!

तो हम क्या?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"सुखियां सब संसार है खावें और सोवें
दु:खियां दास कबीर है जागे और रोवे "
मैं
मेरा कुटुंब
मेरा समाज
मेरी गली
मेरा गांव
मेरा शहर
जहां भी देखता हूं बस सब खाते पीते और मस्त
जहां भी देखूं बस सब खानें के लिए दौड़े
जहां भी देखूं बस स्व को भुलाने के लिए पीये
हम कैसे!
और
शायद कोई कबीर का दास हो
वह एकांत में बैठकर बस जागता जागता कहींओं को जगाने की कोशिश करें
शायद कोई कबीर का दास हो
वह एकांत में बैठकर बस तमाशा देख कर रोवे ही रोवे
कैसी है यह जिंदगानी है
जो चार दिनों की कहानी है
जो कोई खेलें अपनो से
जो कोई घायल हो अपनो से
जो कोई मारे अपनो को
जो कोई सहारे अपनो के
बिन कर्मे सबकुछ मांगे
बिन धर्मे सबकुछ पाने
दौड़े और दौड़ाएं चारों ओर
कहें कबीरा यही चक्की
जिसमें सब कोई अपने पराएं
हर कोई खुद से दूर दूर और दूर
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल भक्त पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल प्रेमी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निश्चयी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निःस्वार्थी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल द्रष्टावान पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निरपेक्ष पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल करुणामयि पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल सत्यधारी पाता है

जो जीवन में माता-पिता को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी अमीर हो 🙏

जो जीवन में भाई - बहन के रिश्ते को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी साथ हो 🙏

जो जीवन में पति - पत्नी के बंधन को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी आत्मीय हो 🙏

" सबल " बहुत ही उत्तम पुरुषार्थ है 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नज़र में उम्मीद
नैनों में उम्मीद
होंठों पर उम्मीद
स्वरों में उम्मीद
चहेरे पर उम्मीद
कानों पर उम्मीद
मुस्कान पर उम्मीद
मन में उम्मीद
स्पंदन में उम्मीद
तरंग में उम्मीद
स्पर्श में उम्मीद
क्रिया में उम्मीद
साथ में उम्मीद
दूरी में उम्मीद
लिखने में उम्मीद
सुनानें में उम्मीद
सुनने में उम्मीद
हर तरह उम्मीद
हर वजह उम्मीद
हर सहर उम्मीद
हर स्थिति में उम्मीद
उम्मीद से ही जीना
उम्मीद से ही दौड़ना
उम्मीद से ही रहना
उम्मीद से ही हम
हां! यही सत्य है
हां! यही सिद्धांत है
हां! यही प्रेम है
हां! यही विश्वास है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti " 🌷🙏🌷
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे माता-पिता तुम्हें प्रणाम 🙏
मेरे श्री गुरुदेव तुम्हें प्रणाम 🙏
तुम्हें प्रणाम 🌷 तुम्हें प्रणाम 🌷
तुमसे ही मेरा अस्तित्व
तुमसे ही मेरी पहचान
तुमसे ही मेरी धर्मता
तुमसे ही मेरी कर्मता
तुम्हें प्रणाम 🌷 तुम्हें प्रणाम 🌷

मेरे स्पर्शीय पत्नी तुम्हें वंदन 🙏
मेरे स्पर्शीय पुत्री तुम्हें वंदन 🙏
तुम्हें वंदन 🌷 तुम्हें वंदन 🌷
तुमसे ही मेरा मान
तुमसे ही मेरा सम्मान
तुमसे ही मेरी प्रकृति
तुमसे ही मेरी प्रवृत्ति
तुम्हें वंदन 🌷 तुम्हें वंदन 🌷

मेरे अंगज भ्राता तुम्हें नत मस्तक 🙏
मेरे वंशज पुत्र तुम्हें नत मस्तक 🙏
तुम्हें नमस्कार 🌷 तुम्हें नमस्कार 🌷
तुमसे ही मेरा आशरा
तुमसे ही मेरा सहारा
तुमसे ही मेरा दर्पण
तुमसे ही मेरा तर्पण
तुम्हें नमस्कार 🌷 तुम्हें नमस्कार 🌷
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जन्म जीवन जगत
कर्म धर्म परम
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जान जाती थी दूर नैनों से

मैंने उनका जाना भी देखा है

जान झुरती थी तुटे मन से

मैंने उनका तड़पना भी झेला है

हे कान्हा! तु कहीं भी हो

पर तेरा प्रेम में डूबना मैंने पहचाना है

हे कान्हा! तु ऐसा बसा है यह दिल में

दिल सामने झझुमते कहता है

राधा! तेरे चरणों में मुझे रहना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

होली की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

खेलत हम आज रंगों भरी होली

एक एक रंग में जीवन की जोरी

बरसे आनंद उमंग की फौरी

सखा! आओ खेलें रंगों भरी होली

ठुमक ठुमक पायल बाजे

ढम ढम नगारा गाजे

गूंजें चारों ओर रंगों की धूम

सखी! आओ खेलें रंगों भरी होली

लाल पीला रंग मन उजारे

सफेद हरा रंग तन उबारें

नीला भूरा रंग प्रेम हिलोरें

प्रिये! आओ खेलें रंगों भरी होली

होली की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

खेलों आनंद उमंग रंगीली होली 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वो नहीं सुनता जिसको जल जाना होता है
जल जल कर वही एक सत्य हो जाता है
जिन्हें जीवन कहते है 🌷🙏🌷 "
" राधा "
" कृष्ण "
" मीरा "
" सीता "
" राम "
" शबरी "
" अहल्या "
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जीवत जीवत एक पल सत्य जीवत
अचूक एक किरण उगाय
एक एक किरण साथ साथ उगाय
अचूक एक दीपक प्रज्वलित होय
एक एक दीपक साथ साथ प्रज्वलाय
अचूक एक ज्वाला प्रचंड रुप धाय
चाहे कितना अंधकार चाहे अज्ञान
नष्ट ध्रष्ट त्रृष्ठ षष्ठ भष्ट सारा अंहकार

हम कितने भाग्यशाली है 🙏
हमारे आगे कहीं कहीं पूर्वजों जन्में
अगीनत चरित्रों अखंड सिमाचिन्ह
एक एक किरण होय
सदा उजाला सदा प्रज्वलित किरण
हममें हमसे विकसित होय
पर
हम ऐसे कैसे जो किरण किरण बुझोय
हमसे कलयुग हमसे दुरुपयोग हमसे वियोग
हम कैसे कैसे जीवत जीवत जीव
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जब जब उन्हें देखुं नयन तरसने लगे

जब जब उन्हें निहारु पलक अपलक थंभाऊ

थरथर थरथर अधर थडके राअ्अ्धा स्मरण फडफडे

सररररर सररररर स्वर गूंजे कर्ण खड़े उठें राधा सुनें

मलक मलक चहेरा खिलें कमल रंग समान

हे राधा! हे प्रिया! यूं ही तेरा दीदार करता हूं

सांस सांस भर तुम्हें प्रेम नमन भरता रहूं

राधा! 🌷 राधा! 🌷 राधा! 🌷 राधा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
मेरे मनपावन! मेरे मनभावन!
जहां जहां तु है
वहीं वहीं मेरा दामन
मेरे मनमोहन! 🌷

रज रज में तु है
ज़र्रा ज़र्रा में मैं हूं
कण कण में तु है
क्षण क्षण में मैं हूं
तु मुझमें है मैं तुझमें हूं
कभी न बिछड़ ने की प्रेमी हूं मैं
साथ निभायेगा सदा प्रीत पाइयेगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!

सांस सांस में तु है
रग रग में मैं हूं
रंग रंग में तु है
अंग अंग में मैं हूं
तु कहीं है मैं वहीं हूं
कभी न दूरी की परछाई हूं मैं
शरण धरिएगा सदा चरण रखिएगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!

मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
मेरे मनपावन! मेरे मनभावन!
जहां जहां तु है
वहीं वहीं मेरा दामन
मेरे मनमोहन! 🌷

ऐसा नशा है ऐसी असर है
न दिल होंस में है
न मन काबू में है
बस! तु ही तु है तु ही तु है
कभी न बिछड़ीएगा कभी न छूटीएगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बहुत सारे विचारों के समूह को मेरे विचारों से जोड़ता हूं

उसमें से कोई सकारात्मक धारा जागृत हो तो समझना सत्य का ज्ञान मुझमें अपना अस्तित्व बना रहा है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी बड़ी गुथ्थी की कोई कुछ भी कहें तो उसे ज्ञान, सूचन, विनंती, माहिती या सलाह के बदले " बिजनेस या धंधा " समझा जाय! 🌷🙏🌷

कोई भी कुछ भी कहें या बोले तो वह उनका स्वार्थ ही समझा जाय! 🌷🙏🌷

कोई अनुभव से कहे - कोई संशोधन से कहे - कोई निष्कर्षता से कहे तो भी उसे केवल " प्रोफेशनल " या " व्यापारीक ही समझा जाय 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 कमाल का समय - काल - युग है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

ज्ञान - नहीं समझ 🙏

शिक्षा - नहीं समझ 🙏

संवाद - नहीं समझ 🙏

मार्गदर्शन - नहीं समझ 🙏

आज्ञा - नहीं समझ 🙏

सिद्धांत - नहीं समझ 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कौन कैसे जीये?

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कुंजबिहारी! हे गिरिराज धारी!

हे बांकेबिहारी! हे व्रजरज धारी!

हे सत्याचारी! हे विश्वा धारी!

हे प्रेमाचारी! हे न्याया वारी!

हे गोपीजन हारी! हे वेणु धारी!

हे मयूरपंख धारी! हे कृष्ण मुरारी!

हे यमुना विहारी! हे राधा वारी!

हे भक्ताचारी! हे श्याम धारी!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे कृष्ण! तेरे ही आधारी!

तेरे ही आश्रयी!

तेरे ही आग्रही!

तुझ पर ही वारी!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

भगवान के कार्य को कौन समझ सकते है?

कथाकार

साहित्यकार

सेवाकार

कीर्तनाकार

यात्राकार

भजनाकार

वंशाधर

आज्ञाकार

पूजाकार

दर्शनाकार

पैसाकार

रुपाकार

कलाकार

दयाकार

दानाकार

प्रवचनकार

मनोरथाकार

भेंटकार

या

भक्ताकार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

अपनी समझ को सत्यार्थ करो 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न यह जमीं थी न आसमां था

न यह सूरज था न यह चंद्र था

न यह सागर था न यह हवा थी

न फूल थे न सितारें थे

तब तेरा मेरा प्रेम था है और रहेगा 🌷

हे कृष्ण! तु परमात्मा तो मैं आत्मा हूं

यह परम प्रेम से तु परमात्मा

यह परम अंश से मैं जीवात्मा

जब से तु जागा तब से मेरा उदभव

जब से तुने निभाया तब से मेरा आरव

हे कृष्ण! तु प्रियतम तो मैं प्रिय

यह आराधना से तु परमात्मा

यह साधना से मैं जीवात्मा

न यह सृष्टि थी न यह वृष्टि थी

न यह द्रष्टि थी न यह पुष्टि थी

न यह तृष्टि थी न यह यष्टि थी

हे कृष्ण! यही ही हमारा परम सत्य है

जिससे तु सत्यार्थी है मैं सत्याग्रही हूं

जिससे हम एक एकात्मा है

जिससे हम एक प्रेमात्मा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यार! आपकी उम्र तो!

आपतो बिल्कुल युवा लग रहे हो!

आप सही और सटीक काम करते हो!

आप जबरदस्त हो!

आपकी कुशलता! आपकी तकनीक बहुत उत्तम है!

आप हर ख्याल से सब निभाते हो!

आपसे न कोई भूल या नुकसान नहीं हो सकता!

आप न कभी बहाना! झूठ नहीं बोल सकते!

कमाल है! 🌷🙏🌷

वंदन है आपको 🌷🙏🌷

धन्य है आप! 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगति

बुद्धि घटे चित्त विषय लरमाएं

तेज घटे पर नारी संगति

शक्ति घटे बहुत भोजन खाएं

प्रेम घटे नित ही कुछ मांगत

मान घटे नित पर घर जाएं

पाप घटे हरि के गुन गाएं "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हम ही एकांत में बस यही व्याक्यों बार बार मनन - चिंतन और मंथन करते करते अपने आपको ही पढ़ते रहे 🙏

कुछ तो अमृत पाएंगे

हर तरफ़ - हर हर में कुछ तो है

पर

हमसे ही परिवर्तन का प्रारंभ हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

जोगन - योगन - गोपन - प्रेमन - सखीन - आत्मन

हे माधव!

तु कहे यह प्रेम की कैसी कक्षा है?

तु एक और बाकी अनेक

प्रेम लीला का स्पर्श और असर कैसी!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી શ્રીનાથજી તારું સ્મરણ મને કામ નું

શ્રી શ્રીનાથજી તારું સ્મરણ મને કામ નું

આંખ ખુલે ત્યારે " શ્રી નાથજી શરણં મમ: "

અધર ખુલે ત્યારે " શ્રી નાથજી વરણં મમ: "

શ્વાસ ભરું ત્યારે " શ્રી નાથજી પ્રાણં મમ: "

કદમ ચાલુ ત્યારે " શ્રી નાથજી દંડવત કરું "

ચરણ પડું ત્યારે " શ્રી નાથજી વંદનં મમ; "

દાસ પુષ્ટિ નો દાસ " શ્રી નાથજી વૈષ્ણવ મમ: "

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🙏 🌷 🙏

" व्रज परिक्रमा "

कदम कदम पर मैं लुटाऊं अपनी जीवन यात्रा

समझता हुआ तबसे जो किया वह समर्पित करूं

जिसने जन्म दिया उन्हीं का एक एक ऋण चुकाऊं

जो धर्म अपनाया उसका हर सिद्धांत वंश शिक्षाऊं

एक एक रास्ता पर कर्म फल झंडा लहराऊं

मन के सारे क्रियाओं को रज रज से मिलाऊं

तन के सारे अंगों को प्रकृति में समाऊं

धन के सारे व्यवहार को मनोरथों से न्योछावरुं

जीवन के सारे काल को पंचमहाभूतों में समाऊं

जागते जागते आत्मा को परमात्मा का दास बनाऊं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हाथ में पुष्टि झंडा लहराते मैं चला

पुष्टि पताका फहराते मैं चला

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक स्थली श्री श्रीनाथ की गली

एक एक पंथ श्री पुष्टि चरित्र का कंथ

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक कुंज श्री यमुना की निकुंज

एक एक दर्शन श्री पुष्टि रंग का अर्चन

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक बैठक श्री वल्लभ की गाथा

एक एक झारीजी श्री पुष्टि रस सिंचन

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

पुष्टि परिक्रमा के सर्वे वैष्णवों को दंडवत प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

हम जब संकल्प करते है - मुझे परिक्रमा करनी है 🙏

परिक्रमा का संकल्प उसी घड़ी होता है जब मन स्थिर होता है 🙏

मन स्थिर होने से अपना कालचक्र, भाग्यचक्र, जीवनचक्र और अपना आंतरिकचक्रो भी एक ही कक्षा में होते है 🙏

परिक्रमा इतनी अनोखी प्रक्रिया और लीला है जो हमें भव भव के चक्र से भी मुक्त करती है 🙏

जगत का कोई जीव ऐसा नहीं है जो चक्र की गति में नहीं है। हर कोई चक्र में है और चक्र से बाहर जाने के लिए परिक्रमा ही ऐसी गतिविधिनिधि है जो इससे मुक्त करवाती है 🙏

परिक्रमा में भक्ति करना है - ज्ञानी होना है। जिससे स्व को पहचान सके।

श्री वल्लभाचार्यजी ने जो परिक्रमा की है - वह एक एक चक्र को समझना है 🙏

पैदल चलने से - झारीजी भरने से - दान दक्षिणा देने से - स्थली स्थली दर्शन करने से परिक्रमा करते है - नहीं नहीं 🙏 यह तो यात्रा है।

परिक्रमा! और व्रज परिक्रमा!

गहराई से भी अध्ययन करे तो श्री कृष्ण की पूरी लीला का तात्पर्य समझे तो अवश्य पायेंगे परिक्रमा की योग्यता, यथार्थता, प्रमाणता और सार्थकता। 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

एक गहरी नींद से जागा तो पाया एक टीमटीमाता दीया - दीपक

दीपक की ओर नजर पहुंचते ही अंधेरा तो दूर हुआ पर साथ साथ दिखे वर्तुल 🙏

अपनी ज्योत से टीमटीमाता दीपक जिसकी लौ डगमगाती अपना तेज फ़ैला रही थी 🙏

मन को जगाया

तन को थपथपाया

एक ज्योत अपने आपमें परिक्रमा करती है 🙏

नजदीक पहुंचा तो देखा एक स्थिर बिंदु से उनका तेज चारों ओर प्रदक्षिणा कर रहा है 👍

अपने आंतर आतम ज्योत को स्थिर कर - मन को एकाग्र कर - तन को चाहें कितना भी डगमगाएं! अवश्य तेज जागेगा - प्रकाश पसरेगा और अज्ञान का अंधकार नष्ट होगा 👍

परिक्रमा का सही तात्पर्य यही है 🙏

व्रज - हमारा पवित्र, विशुद्ध और सत्य परम प्रेम धर्म बिंदु है और उसकी परिक्रमा अर्थात हमारा तेजोमय प्रेमानंद - प्रेमामृत - प्रेमास्पद - प्रेमार्चन - प्रेमार्पण 🙏

हे परिक्रमा पाथेय! हमारा नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बार बार सोचता हूं
कितना दौड़ूं!
ऐसा करुं वैसा करुं!
मेरे ख्याल से यही सही है
मेरे ख्याल से यही!
तुम उससे ऐसे हो!
तुम इससे ऐसे हो!
कैसी समझ पाई!
कोई बात नहीं!
अपने लिए सोचों का अर्थ सिर्फ खुद का ही सोचना!
जो करो वह खुद के लिए!
जो सफल हो उसका जानों और खुद अपनाओं!
कॉपी पेस्ट से ही हम सही पाएंगे!
समय समय से खेलों मजबूरी का लाभ लो!
नहीं नहीं मेरे दोस्तों! नहीं नहीं!
हर कोई ऐसा तो कौन बनेगा उत्तम - श्रेष्ठ और उच्च!
हर कोई विचार करें - विश्वास से ही जीना है
हर कोई कार्य करें - जिसमें सत्यता हो
हर कोई व्यवहार करें - जिसमें योग्यता हो
हमारे पास भी यही ही धरती, यही ही आकाश, यही ही जल, यही ही वायु और यही ही सूर्य है
तो भी हम हमारा देश छोड़कर बाहर !
कैसा वेश हमारा!
आज अमेरिकन अमेरिका में है
आज जापानी जापान में है
आज अंग्रेजी अंग्रेज़ में है
और हम हिन्दुस्तानी हर हर देश भटकते है!
कैसे है हम!
🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्त्री के अनेकों रुप

स्त्री का अनेकों स्वरुप

स्त्री का अनेकों रंग

स्त्री का अनेकों अंतरंग

स्त्री का अनेकों संग

स्त्री का अनेकों सत्संग

स्त्री का अनेकों अंग

स्त्री का अनेकों उमंग

स्त्री का अनेकों मन

स्त्री का अनेकों सुमन

स्त्री का अनेकों रमण

स्त्री का अनेकों स्मरण

स्त्री का अनेकों चरण

स्त्री का अनेकों आचरण

स्त्री का अनेकों अर्थ

स्त्री का अनेकों पुरुषार्थ

स्त्री का अनेकों आनंद

स्त्री का अनेकों परमानंद

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" नव रात्रि " की यही है लीला 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

હે ઈશ્વર!
મારાથી જ સૂરજ ઊગ્યો
મારાથી જ આકાશ જાગ્યું
મારાથી જ ફૂલ ખીલ્યાં
મારાથી જ આંખો ઊઘડી
મારાથી જ ગીત રચાયું
મારાથી જ સહું એ સમજ્યું
મારાથી જ
સર્વે મારાથી જ
તો જ હું તારો અંશ
તો જ તું ઈશ્વર
બાકી તો............

લોપ માં પણ તું
અલોપ માં પણ તું
દ્રષ્ટિ માં પણ તું
દ્રશ્ય માં પણ તું
🌷🙏🌷🙏🌷
નથી કદી નિષ્ફળતા
નથી કદી આથમતા
નથી કદી કરમાતા
નથી કદી અસૂરતા
ચોક્કસ સંભળાય છે
ભલે કદી મનને લાગે
પણ
અવશ્ય કંઈક જાગે છે
અવશ્ય કંઈક ખીલે છે
અવશ્ય કંઈક પ્રક્ટે છે
અવશ્ય સત્ય પ્રજવલ્લે જ છે 🙏
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" राधा कृष्ण " की प्रेम समय 🙏

कहां भी हो - कहीं भी है

सदा एक रहते थे

" कोई घड़ी न जाएं बित "

जो राधा कृष्ण के साथ ही है और थी

जो कृष्ण राधा के साथ ही है और थे

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

प्रेम की यही तो उत्कृष्टता है

प्रेम की यही तो उत्कंठा है

प्रेम की यही तो उपासना है

प्रेम की यही तो आराधना है

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

न कोई घड़ी बिछड़ना

न कोई घड़ी छूटना

न कोई घड़ी भटकना

न कोई घड़ी भूलना

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

मिलना भी घड़ी घड़ी

एक रहना भी घड़ी घड़ी

साथ निभाना भी घड़ी घड़ी

पास न हो तो भी सांस में घड़ी घड़ी

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

न कोई घड़ी बिते बिन राधे - बिन कृष्ण 🌷

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" राधा कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

जय जय श्री गोवर्धननाथ

जय जय श्री श्रीनाथजी

जय जय श्री गोकुलनाथ

जय जय श्री यमुनाजी

कृपा है मुझ पर

द्रष्टि है मुझ पर

है मुझ पर पुष्टि

दंडवत प्रणाम करुं

नीश घड़ी घड़ी 🙏

हे मेरे संस्कारेश्वर!

नीत नीत तुम्हारे दर्शन ध्याऊं

रीत रीत पुष्टि प्रीत समाऊं

गोवर्धननाथ की रज चढ़ाऊं

श्री श्रीनाथजी को नैनन बसाऊं

श्री गोकुलनाथ की कंठी धरूं

श्री यमुनाजी का रंग रंगाऊं

यही पायो श्री वल्लभाचार्यजी पथ

यही गायो श्री अष्टसखा के स्वर

यही सोहायो श्री विठ्ठलनाथजी संग

यही शृंगायो श्री पुष्टि भक्त के अंग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन कौन और कौन?

यह धरती मेरी है?

यह आकाश मेरा है?

यह हवा मेरी है?

यह अग्नि मेरा है?

यह जल मेरा है?

यह सागर मेरा है?

यह पर्वत मेरा है?

यह नदी मेरी है?

यह जंगल मेरा है?

यह प्रकृति मेरी है?

यह सृष्टि मेरी है?

बहुत ही गंभीरता से सोचा - चिंतन किया - अध्य्यन किया

न मेरा मेरा और मेरा है 🙏

हर कोई कहता है - मेरा नहीं

तो किसका है?

आप कहो अपनी सोच - विचार - चिंतन और अध्य्यन से की

मेरा नहीं तो किसका है?

अरे! सरलता की बात है - भगवान का है🙏

अरे! भगवान कौन? किसीने समझा? कौन भगवान?

शास्त्रों ने कहा

आचार्य ने कहा

ऋषि मुनियों ने कहा

ज्ञानी ओं ने कहा

भक्तों ने कहा

भावुक ने कहा

अनुभवों ने कहा

आत्मसातों ने कहा

आध्यात्मिकों ने कहा

हर कोई ने कहा 🌷🙏🌷

भगवान भगवान भगवान 🌷🙏🌷

अवश्य सोच कर स्व को ही कहना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

सांस सांसों में व्रज महक भरी

मन मनन में व्रज स्मृति भरी

नैन नैनों में व्रज दर्शन भरा

अधर अधरों पर व्रज कथा भरी

कर्ण कर्णों में व्रज संकीर्तन भरा

अंग आंचल में व्रज रंग भरा

रोम रोम में व्रज स्पंदन भरा

हस्त हस्तों में व्रज सेवा भरी

कंठ कंठील में व्रज गूंज भरी

प्राण हृदय में व्रज लीला भरी

कदम कदम में व्रज रज भरी

क्रिया कर्म में व्रज धर्म भरा

संस्कार संस्कृति में व्रज जीवन भरा

जन्म जीवन में व्रज यात्रा भरी

मन तन धन में व्रज वास भरा

हे राधा! हे कृष्णा! सदा देजो तम निकट वास 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक कामना को मारा - नहीं

एक लोभ को मारा - नहीं

एक माया को मारा - नहीं

एक अपेक्षा को मारा - नहीं

एक क्रोध को मारा - नहीं

एक धूर्तता को मारा - नहीं

एक झूठ को मारा - नहीं

एक आडंबर को मारा - नहीं

एक अंधश्रद्धा को मारा - नहीं

एक स्वार्थ को मारा - नहीं

एक अज्ञान को मारा - नहीं

तो हम विजयादशमी कैसे मनाएं - उजाएं और उत्साहे? 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरी नज़र जहां पहुंचें
वहां वहां तेरा दर्शन है - इसलिए है 🙏

मेरे स्वर जो पुकारें
वह तेरा स्मरण है - इसलिए है 🙏

मेरा उच्छवास जो निकलें
वह तेरी महक है - इसलिए है 🙏

मेरा हस्त जो उठें
वह तेरी सेवा है - इसलिए है 🙏

मेरे चरणों जो बढ़े
वह तेरी परिक्रमा है - इसलिए है 🙏

मेरा मन जो ख्यालें
वह तेरी सुश्रुषा है - इसलिए है 🙏

मेरा तन जो रंगें
वह तेरा रंग है - इसलिए है 🙏

मेरा धन जो वित्तें
वह तेरा ज्ञान है - इसलिए है 🙏

मेरा जीवन जो गुजरें
वह तेरा पुरुषार्थ है - इसलिए है 🙏

यही है वह दिन रात को यज्ञ धरना
यही है वह सवेरा सांझ को कर्म करना

यही है वह समय को समझते रहना
हर घडी - हर काल - हर भविष्य तुममें जगाना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दीक्षा " दीक्षा अवश्य हमें स्वीकारना चाहिए 🙏
दीक्षा संस्कार है 🙏
दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए 🙏
दीक्षा सर्व श्रेष्ठ संस्कार है 🙏
दीक्षा जीवन में एक मातापिता अपने को देते है🙏
दीक्षा आचार्य - गुरु हमें दे सकते है 🙏
माता-पिता की दीक्षा बिल्कुल आवश्यक और सही है 🙏
दीक्षा आचार्य - गुरु की स्व तय कर सकते है या परंपरागत स्व समझ कर तय कर सकते है 🙏
दीक्षा - स्व को शिक्षित - संस्कार सभर - संस्कार युक्त - स्व पहचान की योग्यता और सहायतार्थ है 🙏
जो माता-पिता शिक्षित न हो पर संस्कारी होना आवश्यक है 🙏
वैसे ही जो आचार्य - गुरु शिक्षित होना - संस्कारी होना आवश्यक है 🙏
माता-पिता और आचार्य - गुरु शिक्षित होने का अर्थ है - निष्णात, जीवन की सार्थकता, योग्यता उपलब्ध होना चाहिए 🙏
केवल भौतिक सुख समृद्धि में उत्कर्ष करना - अपेक्षित परिणाम से सामर्थ्य धरना दीक्षा नहीं है 🙏
दीक्षा दु:ख को नष्ट करने हेतु नहीं है
दीक्षा सीखाता है दु:ख क्या है? क्यूं है? यही दु:ख को जगत जीवन से मिटाना है जो कभी न आएं 🙏
दु:ख ही न आएं तो स्वगत ही समृद्ध हो सकते है 🙏
दीक्षाका उपयोग दु:ख हरणके लिए हो ही नहीं सकता. वह अंधश्रद्धा है, गलतफहमी है, गैरमार्गी है 🙏
दु:ख संजोग, परिस्थितियोंसे निर्माण हो तो उसे स्व ज्ञान और पुरुषार्थसे ही निवारण कर सकते है 🙏
यह निवारण की योग्यता दीक्षा से ही उपलब्ध है 🙏
कोई किसीका दु:ख मिटा सकता नहीं है 🙏
श्री राम - श्री कृष्णने अपना हर दु:ख और कष्ट माता-पिता, आचार्य - गुरु जो शिक्षित थे उनसे दीक्षा संस्कार पा कर, अपना पुरुषार्थ जागृत कर ही निवारण किया 🙏 उनके चरित्रोंमें आचार्य वशिष्ठ और विश्वामित्र और सांदीपनि आश्रम में आचार्यने जो दीक्षा दी नहीं की - शिक्षित किया तभी तो उनके जीवनका संजोग और परिस्थितियोंसे दु:ख - कष्ट को अपने श्रेष्ठ और उत्तम पुरुषार्थ से मिटाया 🙏
यह दीक्षा निरपेक्ष है🙏
🌷🙏🌷🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज अपनी जगह
आसमां अपनी जगह
घूमें धरती घूमें चंद्र
घूमें सारा जहां
हम एक जन्म धारी
चारों ओर अनेकों सवारी
चक्र चक्र चक्र घूमें सारी
जल परिवर्तना अग्नि परिवर्तन
वायु परिवर्तना धरती परिवर्तन
आकाश परिवर्तना प्राण परिवर्तन
जो जो जीव जो जो जीवन
जगत प्रकृति सृष्टि ब्रह्मांड
अनेकों जन्म अनेकों जीवन
साथ साथ हां साथ साथ
न कोई जाने हर कोई अन्जाने
जाना आना आना जाना बार बार
एक से अनेक अनेकों से एक
यही धर्म विज्ञान ज्ञान प्रज्ञान
जल से सीखें जीना
अग्नि से सीखें जीना
वायु से सीखें जीना
धरती से सीखें जीना
आकाश से सीखें जीना
जीना जीना जीना जीना
यही सत्य! यही कारण!
भ्रमण भ्रमण भ्रमण भ्रमण

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बिन बांधे दोर

मैं बंधी तेरे नजर से संग

प्रेम की रीत यही

कहीं भी हो

तेरे ख्यालों से बंधे अंग

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

तु सोच ले राधा!

मैं मथुरा घुम्यों

मैं द्वारका घुम्यों

पर हर घड़ी बंध्यों

तुम प्रीत संग

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

शरद पूनम रात्रि

सोलहें शृंगार चांदनी भांति

बिन संशय बिन कोई बंधन

राधे! खेलें हम प्रेम रसली

इतना भिगा पूरा भिगा

जनम जनम तु मेरी बंसरी

कभी अधर से बंधी

कभी हस्त से जुड़ी

सदा आत्म अंग से अड़ी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

राधा! 🌷🙏🌷

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे चरणों में श्री नाथ मेरे दंडवत स्वीकार 🙏
तेरे शरणों में श्री नाथ मेरे दासत्व स्वीकार 🙏
दंडवत स्वीकार में तुम्हारा चरणों स्पर्शाय
दंडवत स्वीकार में तुम्हारा चरणों स्पर्शाय
मेरा जीवन!
हां मेरा जीवन कृत कृत हो जाय 🌷
तेरे चरणों में श्री नाथ मेरे दंडवत स्वीकार 🙏

दासत्व स्वीकार में मेरा जन्म संपूर्णाय
दासत्व स्वीकार में मेरा जन्म संपूर्णाय
मेरा आत्मा!
हां मेरा आत्मा तुझमें समाय
तेरे शरणों में श्री नाथ मेरा दासत्व स्वीकार 🙏

श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
रमण करो मुझमें रमण करो
रमण करो मुझमें रमण करो
मेरा मन तन!
मेरा मन तन!
हां मेरा मन तन तुझमें बसाय 🌷
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
श्री श्रीनाथजी बावा की जय 🙏
श्री वल्लभाधीश की जय 🙏
श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय 🙏
श्री गिरिराज धरण की जय 🙏
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

श्याम भयी श्याम की प्यारी

प्यार प्यास में श्याम धरी

एक एक घड़ी एक एक लडी

श्याम भयी 🌷🙏🌷

मन श्याम तन श्याम

अंग श्याम संग श्याम

श्याम भयी 🌷🙏🌷

न कोई पास न कोई आस

न कोई भेद न कोई अवैध

श्याम भयी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

सच हम कैसे है!

हर कोई के सामने गरीब हो कर अमीरी दिखाते है

और

मांगते रहते है हर कोई की कृपा या दया🙏

सच हम कैसे है!

हर कोई के सामने तवंगर का दिखावा करते है

और

चिल्लाते रहते है अपना चरित्र संस्कार चिरते हुए🙏

सच हम कैसे है!

झुकाते है दुनिया अपने अहंकार घमंड से

और

सामने सत्य का किरण उठा चूर चूर जीवन बिखर गया 🌷

सच हम कैसे है!

खुद को पूजवाने अपने विश्वास को बेच देते है

और

खुद माता-पिता होते हुए अपने माता-पिता को बेच देते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी अदभुत संस्कृति है हमारी 👍

हम नदी को पूजते है और उन्हें गंदगी में बरबाद कर देते है 🙏

हम वनस्पति को पूजते है और उन्हें कांट कांट कर वैरान कर देते है 🙏

हम पर्वत को पूजते है और उन्हें तोड़ मरोड़ कर खत्म कर देते है 🙏

हम धरती को पूजते है और उन्हें हमारी इच्छाओं का भार से दबोच देते है 🙏

हम अग्नि को पूजते है और उन्हें निम्न उर्जा में सम्मिलित से अशुद्ध कर देते है 🙏

हम मंदिर को पूजते है और उन्हें अश्लीलता के रंग से विकृत कर देते है 🙏

न समझना प्रकृति को

न समझना संस्कृति को

न समझना कृति को

बस यूं ही जीते जीते सबको मारते जाना 🙏

एक ही ख्याल

आडंबर करना

ज्ञानी समझना

निकंदन निकंदन और निकंदन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीने का अर्थ है जागना

जीने का अर्थ है संवरना

जीने का अर्थ है पुरुषार्थना

जीने का अर्थ है आहुतना

जीने का अर्थ है संस्कृतना

जीने का अर्थ है मार्गना

जीने का अर्थ है यज्ञना

जीने का अर्थ है त्यागना

जीने का अर्थ है सर्जना

जीने का अर्थ है खिलना

जीने का अर्थ है साधना

जीने का अर्थ है आराधना

जीने का अर्थ है प्रेमना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज हमारा पुरुषार्थ का संस्कार संस्कृति दीपक प्रज्वलित करके, हमारे आत्मा का उजास परब्रह्म परमात्मा को आहूत करते है 🙏

दीपक प्रज्वलित की शुभकामनाएं 🙏

आज हवेली मंदिर गया 🙏
सबके मुखड़े पर अति आनंद उमंग और उत्साह उल्लास झलक रहा था 😀
हर कोई अपने आपको धन्य धन्यता की अनुभूति करते थे 🌷 हर कोई एक दूसरे से " जय श्री कृष्ण " जय श्री कृष्ण " कहते स्वीकारते सहजता से दर्शन करने मुख्य द्वार पर पहुंच रहे थे। 🙏
हर कोई नएं रंग-बिरंगी वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित थे, ऐसे आनंद का आविष्कार करते थे तो अपने अंतरंग को प्रज्वलित कर आत्म ज्योति से सारे स्थल को तेजोमय - प्रकाशमय करते करते दीवाली का महापर्व को झगमगाते थे। 🌷
वहां टहल पुकारी - दर्शन का समय हो गया है 🙏 हर कोई उर्मित हो कर हवेली के मुख्य चौक की और अपने कदम बढ़ा रहें थे। कोई एक ने उमंग स्वरों में धून गाई - " श्री कृष्ण: शरणं मम - श्री कृष्ण: शरणं मम " सारा स्थल " श्री कृष्ण: शरणं मम - श्री कृष्ण: शरणं मम " की गूंज से हर कोई के मन, तन और नैनों में श्री श्रीनाथजी की झांकी के लिए तड़पने लगे ▯
अपने परम प्रिय परमात्मा को नैनों से छूने तरस रहे थे।
श्री मुख्याजी ने जैसे श्री प्रभु द्वार खोले, हर कोई उत्तेजित हो कर अपने ज्ञान भाव को लुटाने लगे - " श्री वल्लभाधीश की जय "
" श्री गुसाईजी परम दयाल की जय "
" श्री गिरिराज धरण की जय "
" श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय "
" श्री श्रीनाथजी बावा की जय "
" आज के आनंद की जय "
" आनंद कराने वाले की जय "
अपने नैनों, मन और तन में श्री श्रीनाथजी को बिराजमान कर अपने आंतर आत्मा से जोड़ने लगे 🙏
कितनी अदभुत अनोखी अनुभूति 🙏
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
आप सभी को दीपावली कि शुभकामनाएं 🙏
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti " 🌷🙏🌷
વ્રજ ભૂમિ - અમારી સંસ્કૃતિ 🙏 શુભ દીપાવલી ની અનોખી પ્રભાત નાં સૂર્ય 🌞 કિરણો થી આપણું સહું નું જીવન સદા તેજોમય બને તેવી પ્રાર્થના 🙏

दर्शन करने मन गया 🙏
दर्शन करने तन गया 🙏
दर्शन करने नैन गया 🙏

कदम कदम पर चल दिया
श्रीनाथजी के हवेली मार्ग

एक एक विचार पर मन कहें
एक एक डग पर तन कहें
एक एक नजर पर नैन कहें

हे श्रीनाथ! यह मन है तेरे आश
हे श्रीनाथ! यह तन है तेरे सांस
हे श्रीनाथ! यह नैन है तेरे प्यास

नील गगन से तु नीला रंग दे
नील जल से तु नीला रस दे
नील प्रकृति से निला सज दे

संकल्प संकल्प से तु प्रक्ट मेरे मन
डगर डगर पर तु चलें मेरे तन साथ
नजर नजर पर तु निहरें मेरे बसें नैन

मन से जुड़े
तन से पकड़े
नैन से बसें
तु सदा मेरे अंतरमन
तु सदा मेरे अंतरंग
तु सदा मेरे द्रष्टिसंग

द्वार खुला तु मन पाया
द्वार खुला तु तन पाया
द्वार खुला तु नैन पाया

तु मुस्कुराया मन खिल उठा
तु शृंगार सजाया तन नाच उठा
तु आर्त जगाया नैन भर आया

हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई मन
हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई जीवन
हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई दर्शन
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक का प्रियतम मंदिर में

एक का प्रियतम हवेली में

मैं अकेली भटकुं इधर उधर

कब खुलें दर्शन द्वार?

एक का प्रिये तरसे यमुना किनारे

एक का प्रिये झूरें वृंदावन वांटे

मैं अकेली भटकुं बिरहा मारी

कब पाऊं दर्शन लीलाधर?

इतना अवश्य कहूं

प्रियतम प्रिये तड़पें मेरा जुहार

वो कहीं भी खेलें अनेकों साथ

वह मेरा है 🌷 वह मेरा है 🌷

अवश्य छूएं मेरा प्यार 🌷

यमुना की निकुंज में

वृंदावन की गलियों में

मुझे ढूंढें मुझे पुकारें

दोनों बार बार कहीं बार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

શ્રી પ્રભુ રસ સેવામાં મગ્ન થઈ
નાચું સદા થઈ થઈ થઈ

મને શ્રી વલ્લભ બોલાવે અહીં અહીં અહીં
કરું સેવા હું પુષ્ટિ થઈ થઈ થઈ

મને શ્રી યમુનાજી બોલાવે નાહીં નાહીં નાહીં
કરું શૃંગાર હું સેવક ભઈ ભઈ ભઈ

મને શ્રી ગુંસાઈજી બોલાવે ધઈ ધઈ ધઈ
કરું મેવા હું અપરસ વઈ વઈ વઈ

મને શ્રી ગિરિરાજજી બોલાવે છૂઈ છૂઈ છૂઈ
કરું પરિક્રમા હું દંડવત દઈ દઈ દઈ

મને શ્રી બેઠકજી બોલાવે ઠઈ ઠઈ ઠઈ
ભરું ઝારીજી હું યમુના જળ લઈ લઈ લઈ

મને શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ બોલાવે ચઈ ચઈ ચઈ
કરું સત્સંગ હું વૈષ્ણવ જઈ જઈ જઈ

મને શ્રી સુબોધિનીજી બોલાવે જ્ઞઈ જ્ઞઈ જ્ઞઈ
બનુ દાસ હું પુષ્ટિ રસ પઈ પઈ પઈ

" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ख्यालों की राहों में
ख्यालों की राहों में
आआआआआआआआ
ख्यालों की राहों में
हे राह! राह! राह! राह!
ख्यालों की राहों में
निरखुं मैं सांवरिया का गांव

ख्यालों की राहों में
आआआआआआआआ
ख्यालों की राहों में
निहालुं सांवरिया का नाम

यादों की लहरों में
हां! हां! यादों की लहरों में
श्याम! यादों की लहरों में
झुमे तेरा नाम 🌷

यादों की लहरों में
हो हो हो हो! यादों की लहरों में
श्याम तु भये!
हां तुम भये! तुम भये हो श्याम!

मैं निहारुं मैं निहालुं
मैं निहारुं मैं निहालुं
मैं निहारुं मैं निहालुं
निहारुं निहालुं सांवरिया का नाम 👍
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

आकाश की लालिमा

मधुर वायु की महकता

पंखीओ का कलरव

में

नई नई चेतना लेकर

नूतन वर्ष का सूरज

नवनीत नया नया रंग

कदम रखा नूतन वर्ष का

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यही रंग यही उमंग यही संग

सदा हम सबमें बना रहे

ऐसे आनंद विभोर के साथ

आप सभी को " नूतन वर्ष अभिनंदन " 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नूतन वर्ष की नूतन बात "
नहीं कोई सूचन है 🙏
नहीं कोई आवेदन है 🙏
नहीं कोई रीत है 🙏
नहीं कोई समाचार है 🙏
नहीं कोई आज्ञा है 🙏
नहीं कोई हुकम है 🙏
नहीं कोई निवेदन है 🙏
केवल एक विचार है 🙏
मित्रों!
हम जो भी उम्र के है
हम जो भी कक्षा पर है
हम जो भी शिक्षित हैं
हम जो भी धर्म अनुसार है
हम जो भी उपाध्यक्ष है
हम जो भी ज्ञानी है
हम जो भी कर्तव्य निष्ठ है
हम जो है 🙏
एक विचार आपके सामने रख रहा हूं 🙏
हम जो भी जीवन जी रहे है
सच! बिल्कुल आनंद भरा है 🙏
ऐसा क्यूं?
क्यूंकि जो कर्म करते है चाहे सुक्ष्मता से या समक्षता से अवश्य अपना भविष्य अवगत करते ही निपटता है 🙏
हम ज्यादातर सोचते है अमीर होना, समृद्ध होना, जमीनदार होना, पैसादार होना, धनवान होना 🙏
हम इसके ही चक्कर में सारा जीवन निपटाते है - यह पुरुषार्थ अधूरा है, हमें सत्य और आत्मविश्वास की राह पर चलना है।
सत्य बोलना, विश्वास करना, सेवा करना, साथ निभाना, मदद करना - तुरंत ही उनका जो भी योग, प्रयोग, संशोधन होता ही है!
वह योग, प्रयोग और संशोधन अवश्य हमें सही राह और निर्णीत करवाता है।
यह हमें झूठ बोलने से, दंभ करने से, असत्य आचरणों से दूर रखते है। 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

मेरा मन हुआ पवित्र

मेरा तन हुआ विशुद्ध

मैं हुआ श्री वल्लभ शरण रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

आशीर्वचन से ज्ञान पाया

चरणस्पर्श से सेवा ध्याया

मैं हुआ श्री वल्लभ सेवक रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

पुष्टिमार्ग सिद्धांत जीवन जताया

जन्म जीवन तात्पर्य दर्शाया

मैं हुआ श्री वल्लभ दास रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી ગોકુલનાથજી

જય ગોકુલેશ ગોકુલેશ ગોકુલેશ

શ્રી મદ્ ગોકુલ ગોકુલ ગોકુલ

શ્રી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી

શ્રી ગોકુલેશ શીશ નમાવી આજ્ઞા માંગું શ્રી વલ્લભા

સદા શરણ માં રાખજો ગોકુળ નાં શ્રી વલ્લભા

ચરણ સ્પર્શ માંગું હું શ્રી વલ્લભા

હે પુષ્ટિમાર્ગ રક્ષક હે વૈષ્ણવ સર્જક

મુજ જીવ ને બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા આપો શ્રી વલ્લભા

મુજ વૈષ્ણવ ને પુષ્ટિ દાસત્વ આપો શ્રી વલ્લભા

દંડવત પ્રણામ કરું હું શ્રી વલ્લભા

જય ગોકુલેશ ગોકુલેશ ગોકુલેશ

શ્રી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

दीपावली 🌷🙏🌷

नूतन वर्ष 🌷🙏🌷

लाभ पंचमी 🌷🙏🌷

युगों से आनंद उमंग और उत्साह और उर्जा भरा संस्कृति त्योहार 🌷🙏🌷

यह त्योहार में हम - सर्वत्र से आनंद ही आनंद लुटाते है 👍

न कोई तृष्णा न कोई अपेक्षा

न कोई घृणा न कोई वैर

न कोई घमंड न कोई आडंबर

न किसीकी अहवेलना न किसीका अपमान

न किसीके साथ धृर्तता न किसीके साथ दुष्टता

कितना अनोखा और आह्लादायक त्योहार 🌷🙏🌷🙏🌷

यह त्योहार में

-हम अपनी आंखों का जहर

-हम अपनी कौटुंबिक वैर कटुता

-हम अपनी सामाजिक एक दूसरे को नीचा दिखाने की हरीफाई

-हम एक दूसरे का अपमान अवगुण

-हम साथ साथी का झूठ

यह सभी का त्याग और बलिदान करने का त्योहार है 🙏

चोरी चपाटी लुट और झूठ हमारा संस्कार नहीं पर साथ साथ रहने और चलने का पुरुषार्थ है 🙏

सच कहूं तो - आप सब मेरे ऐसे प्रेरणादायक उद्धारक है कि

हम सब आनंद, उमंग और उत्साह और उर्जा में एक हो कर जीये तो हर दिन दीवाली और हर दिन नूतन वर्ष 🙏

चलो यह घड़ी से संकल्प करें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" क्यूं हारे - क्यूं हारे - क्यूं हारे "

हम हिन्दुस्तानी क्रिकेट मेच क्यूं हारे?

हम कितने भी होशियार और सशक्त हो

पर सदा अपनी होशियारी और सशक्तता को सही दिशा में योग्यता प्रदान करनी चाहिए 🙏

हमें सदा एकता में ही बंधना चाहिए 🙏

अहंकार और अभिमान अज्ञानता जताता है - जो सदा निपुणता को नष्ट करती है 🙏

हमें योग्य पद्धति से अपने आप को और अपने साथी को शिक्षित करना चाहिए 🙏

हमारी पास यह है - हम यह है - हम यह कर सकते है - हम कभी हार ही नहीं सकते! - यह धारा हमें छिन्न-भिन्न करती है 🙏

समय और परिस्थिति को जान कर, समझ कर योग्य निर्णय और स्व को और सारे साथी ओं को दीर्घ द्रष्टि से शिक्षित करना चाहिए 🙏

अति चिंतनीय 🌷🙏🌷

यही ही हमारी सफलता की प्रज्ञानता है 🙏

जागते रहो! जागते रहो! जागो जागो!

जगाओं! जगाओं! जगाओं! 🌷🙏🌷

मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
ओ मुझे ले चलो श्री नाथजी
मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे

मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपका धाम सुनहरा रे
मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपका धाम सुनहरा रे
जहां सदा प्रक्टे प्रकाश तेज़ रे

मैंने सुना है श्री नाथजी
आपका धाम मधुरा रे
जहां सदा म्हंके मधुर सुगंध रे

मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे

मैंने सुना है श्री यमुनाजी
ओ मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपके धाम में वैष्णव जन रे
जो सदा पीये पुष्टि पान रे

मैंने सुना है श्री नाथजी
ओ मैंने सुना है श्री नाथजी
आपके धाम में गोपी जन रे
जो सदा लुटाएं पुष्टि रस रे

मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

" प्रबोधिनी एकादशी " 🌷🙏🌷

हर भक्ति वर्धक को प्रबोधिनी एकादशी की शुभकामनाएं 🙏

देव उठी अगियारस - सोचें 🙏

देव उठी - देव उठे! क्यूं और कैसे?

चार मास पहले देव शयनी एकादशी और आज देव उठी अगियारस।

कैसी मान्यता?

अपने आपसे ही सोचें 🙏

" प्रबोधिनी एकादशी "

हमें हमारा पुरा वर्ष का पुरुषार्थ को टटोल कर हमें अपने आपको प्रबोध करना है कि मैं यह कक्षित हूं - मुझमें क्या परिवर्तन और जीवन को उत्तम करने में कहां तक सफलता पाई। 🙏

अपने आपमें प्रकाश का प्रजवल्लन को कितना है और मुझे आध्यात्मिक, जागतिक और भौतिक की कक्षा में कहां तक पहुंचा? कौन कौनसे संकल्प, मार्गदर्शन और वैविध्यता से कितना आगे के लिए जागृत होना है - यही पृथक्करण के दिन को " प्रबोधिनी एकादशी " कहते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आहारशुद्धौ सत्व शुद्धि: सत्वात्संजायते ज्ञानम् "

गहरा जीवन सिद्धांत है - हम सोचते है 🙏

अमेरिकन पके हुए आहार खरीद कर आरोगते है 🙏

ब्रिटिशर पके हुए आहार खरीद कर आरोगते है 🙏

तो हम हिन्दुस्तानी भी पके हुए आहार खरीद कर क्यूं नहीं आरोग सकते?

अरे! बिलकुल सही 🙏 हम भी आरोग सकते है 🙏

पर 🙏

हमारे अन्न और खाद्य सामग्री के बर्तन कैसे है - समाचार पेपर, ज़हर भरी प्लास्टिक के साधन, कैसे कैसी स्थानों पर बनते है खाद्य पदार्थ - अशुद्धियां भरा स्थल और बनाने वाले 🙏

जो अन्न और जल आरोगते है ऐसे ही हमारे विचार और आचार 🙏

नहीं स्त्री अशुद्धियां का संस्कार 🙏

नहीं कोई अन्न और जल को शुद्ध रखने और पकाने का अपरस 🙏

एक खाएं तो सब खाएं 🙏

चाहे हम कितने भी ऊंचे पढ़ें हो 🙏

कोई सत्य निर्देशक टिप्पणी करें तो!

ऐसे वैसे तैसे 🙏

बाक़ी हमारी संस्कृति! 🙏

बाक़ी हमारे संस्कार! 🙏

हम ही शुद्ध! हम ही श्रेष्ठ! 🙏

हमसे सीखें और हमें सिखाएं? 🙏

कभी तो एकांत में सोचों की मैं क्या हूं?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बच्चे बड़े होते होते हर माता-पिता सोचते है उनकी पढ़ाई पूरी हो जाएं और अच्छी जोब मिल जाएं तो उनका विवाह करके मैं अपने आपको खुश नसीब समझ कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊं और समाज को एक योग्यता प्रदान करुं 🙏

माता-पिता सोचते रहते है - बेटी को अच्छा पति मिले - सही जीवन साथी मिले, सुख संपत्ति मिले और अच्छा कुटुंब मिले - न कोई तकलीफ़, न कोई हैरानी, न कोई दु:ख 🙏

रहने को अच्छा घर, जीवन निर्वाह के लिए सुख साहिबी, बस झूमती रहे, गाती रहे, नाचती रहे, आनंद विभोर और उमंग उत्साह में पलती रहे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

गहराई से सोचें - हम ऐसे जी रहे है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हम हमारे कुटुंब के आंगन में ऐसे जीते है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

* मानो तो सुख - मानो तो दु:ख

बाक़ी

हर एक के जीवन की कोई कहानी है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

क्यूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः 🙏

कैसी अकेली

कैसी अलबेली

कैसी नवेली

कैसी शर्मीली

कैसी रसीली

कैसी पहेली

कैसी मनचली

कैसी सहेली

कैसी नशीली

कैसी मींचोली

कैसी चमेली

कैसी दर्दीली

कैसी रवेली

कैसी छैली

कैसी मैली

कैसी जहरीली

सदा मेरी बनके पास पास आएं ऐसी छबीली

हां! कैसी अकेली

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय भारत " जय हिन्दुस्तान "

एक एक भारतीय की प्रार्थना ने आज प्रमाणित कर दिया की " जो आत्मा से करें याचना तो श्री परमात्मा दे सफलता " 🙏

एक टनल - ४१ शूरवीर योद्धा

गर्व है सारे हिन्दुस्तान को 👍

हमारी प्रार्थना, हमारा पुरुषार्थ, हमारी आस्था, हमारा विश्वास ने आज बुलंदी छू लिया 👍

एक एक भाई हमारे सलामत हमारे साथ आ पहुंचे 🙏

धन्य है हमारी सेना 👍

धन्य है हमारी NDRF 👍

धन्य है हमारे साथ देशों 👍

धन्य है हमारे देशवासियों 👍

जीते है पर्वतों को

जीते है चट्टानों को

जीते है आंधी को

जीते है तूफान को

🙏👍🙏👍🙏👍🙏

भारत माता कि जय 🌷

कर्मवीरों की जय 🌷

👍🙏👍🙏👍🙏👍

जय हिन्द - जय भारत

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

घर घर बिराजे घर घर साजे

आनंद उमंग उर्जा उजाले

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

श्री वल्लभ आज्ञे सेवा दर्शाई

श्री विठ्ठल राहे शृंगार सजाई

आनंद उत्सव रंग बिखराई

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

श्री यमुना पय पान सिंचाई

श्री गिरिराज रज निज परछाई

पुष्टि प्रेम जीवन बरसाई

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

" श्री नाथजी बावा की जय " 🙏

" श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय " 🙏

" श्री गिरिराज धरण की जय " 🙏

" श्री वल्लभाधीश की जय " 🙏

" श्री गुसाईजी दासत्व की जय " 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

મારી પત્ની બિમાર છે એટલે હું એક ડૉક્ટર પાસે તેને લઈ ગયો - અમારો નંબર તપાસવામાં આવે ત્યાં સુધી મારી નજર હોસ્પિટલ ની ભીંતો વાંચતી હતી ત્યાં મારી નજર એક વાક્ય ઉપર થંભી ગઈ -

હું આ દુનિયા નો તન, મન અને ધન નાં રોગોનો નિષ્ણાત. હે ઈશ્વર! મારાથી આવનાર કોઈપણ બિમાર વ્યક્તિ ને હું અચૂક યોગ્ય સારવાર અને ઉપચાર કરી તે બિમારી થી મુક્ત કરી તંદુરસ્ત બનાવીશ 🙏

વાહ! હું અત્યંત આનંદિત થઈ ને તન, મન અને વિશ્વાસ થી તેઓને વંદન કર્યા 🙏

મારી પત્ની ને બતાવી યોગ્ય માર્ગદર્શન અને ઉપચારીક સૂચનો લઈ નક્કી કરેલ ફી ચૂકવી બહાર નીકળ્યા 🌷

એકાંતમાં બેઠો હતો અને મારું મન હોસ્પિટલ ની ભીંતો ઉપર પહોંચી અને ફરી પેલું વાક્ય મનની નજર પર સ્થિર થયું 🙏

" હું આ દુનિયા નો તન, મન અને ધન નાં રોગોનો નિષ્ણાત. હે ઈશ્વર! મારાથી આવનાર કોઈપણ બિમાર વ્યક્તિ ને હું અચૂક યોગ્ય સારવાર અને ઉપચાર કરી તે બિમારી થી મુક્ત કરી તંદુરસ્ત બનાવીશ 🙏 "

મનની સ્થિરતા અને તીવ્રતા એ મને અતિ ઊંડાણ માં લઇ ગયા અને એક વિચાર જાગ્યો 🙏

" દુનિયામાં કેટલાં બધાં જુદી જુદી તન, મન અને ધન ની બિમારી નાં નિષ્ણાત ડૉક્ટરો અને સહું પારંગત તો દુનિયા નિરોગી અને તંદુરસ્ત જ હોય 👍

તો આટલી બધી બિમારીઓ કેમ?

તમામ યોગ્યતા પૂર્વક નો આહાર, વ્યવહાર અને કુશળતા થી જીવન જીવે તો બિમારીઓ કેમ?

હાં! જો ડૉક્ટર પોતે અને વ્યક્તિ પોતે તન, ન અને ધનની બિમારી ને છોડવા જ નહીં ચાહતા હોય તો અવશ્ય દુનિયા પોતેજ બિમાર રહેવા ઈચ્છે છે અને કેવળ આડંબર કે ડામાડોળ થી જ જીવવું નક્કી હોય તો તો પ્રશ્ન જ નથી - જીજ્ઞાસા નથી કે વિશ્વાસ નથી🙏

ઓહહહ! તો તો દરેક સેક્ટરનું વ્યક્તિત્વ આ જ છે અને રહેશે જ 🙏

ઓહહહ! તો તો મરતાં જ જઈએ, લૂંટાતા જઈએ, ડૂબતાં જઈએ અને તૂટતાં જઈએ 🙏

સત્ય, સચોટ અને વિશ્વાસ પૂર્ણ 🌷 🙏 🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

જય શ્રી કૃષ્ણ 🌷🙏🌷

જીવનનું એક રહસ્ય 🌷🙏🌷

માતાપિતા અને બાળકો માટે કરેલા

એક એક વિચાર - એક એક કર્મ યાદ રાખજો.

જેમ જેમ બાળકો મોટા થતાં જાય છે અને માતાપિતા પ્રૌઢ થતા જાય છે. તેઓને એટલી બધી સમજ છે કે હું બાળક હતો ત્યારે મારા માતાપિતા કેવું જીવતા હતા અને કેવું ભવિષ્ય તૈયાર કરતા હતા.

બસ આ જ ભૂમિકા જ્યારે આપણી તે ઉંમર પર આવે છે ત્યારે જે જે અનુભવો અને જે જે પરિસ્થિતિ ઉભી થાય છે તે આપણાં જ ભૂતકાળ નું ફળ જ છે.

આ જીવન નું ચક્ર છે.

આજે વારંવાર કહીંએ છે

૧. નશીબ માં હશે તે થવાનું છે.

૨. હમણાં આ ઉંમરે મઝા માણો ભવિષ્ય જે હશે તે

૩. આવું તો આવ્યા કરે અને ચાલ્યા જ કરે

ચોક્કસ સિદ્ધાંત છે 🙏

જે બીજ સ્વ વિચારે - સ્વ કર્મે રોપ્યા છે તેનું ફળ તે પ્રમાણે જ મળે 👍

એવું કેળવો અને કેળવાઓ કે જીવનની દરેક પરિસ્થિતિ અને ઉંમર માં આનંદ જ મળે 🙏

વિચારી લો 👍

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" भविष्य " भविष्य का अर्थ

आजतक के कहीं माध्यमों से मापा तोला जा सकता है कि " भविष्य " का अर्थ है

१. इतनी पूंजी इक्ठ्ठी करनी जो हमारे वंश के वंशज के वंशज सुख साहिबी में जीवन यापन करें 🙏

२. इतना बिजनेस का व्याप करना जो अनेकों पीढ़ी सदा अपने व्यवसाय से अपनी जीवन यात्राएं समृद्ध हो 🙏

३. सामाजिक स्थान और स्थिति ऐसी संवरना जो सदियों से यह नींव सुरक्षित रहें 🙏

ऐसे कितने संकल्प और सिद्धि प्राप्त होती रहें और जीवन ही जीवन बहता रहें 🙏

सोच लिया - तय कर लिया 🙏🙏

🌷🙏🌷 यही ही सामर्थ्यता है, श्रेष्ठता है - सत्यता है 🌷🙏🌷

गहरा - गहरी और कहीं उड़ाई 🙏

यही जीवन की सार्थकता, योग्यता और उपलब्धता है 🙏

मनुष्य जन्म धरा है - सोच लो 🙏

यही ही हमारा सत्य है? 🙏

गर्व से सोचो 🙏

आत्म विश्वास से सोचो 🙏

प्रमाणिकता से सोचो 🙏

आत्म ज्ञान से सोचो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नमस्ये " चिंतन की योग्यता और क्षमता से यह शब्द का पार्दुभाव है 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी - श्री पुष्टि धात्री यमुनाजी को " नमामि यमुना महं " करते है 🙏

यह " नमन " का अर्थ, स्पर्श और आध्यात्मिकता आत्मसात करना अति आवश्यक है 🙏

हम जीते जाते है - जीते जाते है

हम अनेकों जन्म धरते जाते है

पर हम सत्य को शिक्षित भी नहीं करते है तो हम ज्ञान भाव भक्ति कैसे करेंगे!

आडंबर और अज्ञानता से तो हम चौरासी लाख योनियां तो क्या - हम चौरासी करोड़ योनियां जन्मों से भी हम अपने आपसे विचलित रहेंगे 🙏

हमारे संस्कारों और संस्कृति आचार्यों ने हमें जो क्षण भर की शिक्षा दी है उन्हें हमारे जीवन में अपनाने से ही हम स्व को विद्यार्थी की कक्षा में स्थापित कर सकेंगे 🙏 यही ही हमारी प्रथम प्राथमिकता है 🙏

शांत - एकाग्र - सत्य और आत्मविश्वास से ही हम हमारी आत्मा को तेजोमय और प्रेमानंद कर सकते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री यमुना नदी का किनारा "
श्री यमुना
श्री यमुना नदी
श्री यमुना नदी का किनारा
एक एक रज और एक एक बूंद का स्पर्श करें
एक एक रज में तपश्चर्या
एक एक बूंद में प्रेम
कहीं घटमाळ से टटोलो
एक एक तपस्वी
एक एक गोपी
यह स्थली पर कौन नहीं बसना चाहे!
श्री परब्रह्म का प्राकट्य
श्री गोप गोपी का प्राकट्य
श्री सखा का प्राकट्य
श्री सखी का प्राकट्य
श्री भक्तों का प्राकट्य
श्री संस्कृति का प्राकट्य
श्री प्रेम का प्राकट्य
श्री आनंद का प्राकट्य
कौन न चाहे बार बार जन्म का!
कौन न चाहे बार बार रज में लपेटना!
कौन न चाहे बार बार बूंद पान करना!
जिससे नैन, तन, मन, धन और जीवन विशुद्ध हो
जिससे अंग, अंतरंग, रंग, संग और तरंग पवित्र हो!
जिससे सूर्य, नभ, धरती, वायु और जल मधुर हो!
हे यमुना नदी का किनारा! 🌷🙏🌷
शत् शत् नमन 🌷🙏🌷
सदा मेरा सिंचन करना 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

હો હો હો હો

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ક્યારે કહે વલ્લભ

ક્યારે કહે વિઠ્ઠલ

ક્યારે કહે ગોવર્ધન નાથજી રે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ઘર ઘર સેવા આડંબરી

હવેલી હવેલી પૈસા ની રળી

માર્ગ માર્ગ પુષ્ટિ રવડે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

કોઈ કહે મારું કુળ

કોઈ કરે સિદ્ધાંતો ધૂળ

દરેક રમાડે શ્રી વલ્લભ મૂળ

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ઓ ઓ ઓ

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

આ આ આ

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

जयती श्री यमुने 🙏

हे महाराणी श्री यमुने

स्मरण करते पुष्टि पाएं

धन्य धन्य चित्त उजालें

हे जयती श्री यमुने 🙏

मुरारी पद पंकज यमुने

पुष्टि जीव वैष्णव सोहाएं

रंग अंतरंग श्री कृष्ण रंगाएं

हे जयती श्री यमुने 🙏

ब्रह्मसूते श्री वल्लभ बांधे

पुष्टि वैष्णव माला गंठाएं

श्री श्रीनाथजी वरण घराएं

हे जयती श्री यमुने 🙏

पुष्टि धात्री पुष्टि शास्त्री

पुष्टि पात्री पुष्टि गौत्री

श्री यमुना! हे श्री यमुने

हे जयती श्री यमुने 🙏

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भक्त तत्व - भक्ति - भक्त भक्त चरित्र "

भक्त तत्व

भक्त तत्व हम जाने, समझे, अपनाएं और पामे तो ही हम मनुष्य है 🙏

भक्त तत्व को जानना 🙏

हमारा जो अंग है

हमारा जो मन है

हमारा जो चित्त है

हमारा जो आत्मा है

हमारा जो धर्म है

हमारा जो कर्म है

जो हम जाने तो हम भक्त तत्व की दिशा की ओर गति कर सकते है 🙏

हमारा अंग अर्थात हमारे जितने भी अवयव है, हमारे जितने भी इन्द्रियां है उन्हें उत्तमता से पहचानेंगे तो ही हम भक्त तत्व को जान सकते है 🙏

हर अवयव, हर इन्द्रियां, हर रंग अंतरंग को हमें सही से पहचानना है तो ही हम उनसे जो करवाएंगे तो ही भक्त तत्व का पार्दुभाव होगा 🙏

योग - समाधि - यज्ञ - यह ऐसे साधन है जो हम अपने अंग, अंतरंग और रंग को जान सकते है, पहचान सकते है और आज्ञाकारी कर सकते है 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर दूर
हर कोई से दूर जाना है

जो यह घड़ी तक
दूर गएं जो दूर है दूर है

कितने मन से जुड़े
तो भी दूर है ओहहह दूर है

कितने आत्मा से जुड़े
दूर दूर और दूर ही है

जन्म दिया दूर दूर
संस्कृति नाम दिया दूर है

संस्कार शिक्षा सिंचा
दूर दूर कहीं दूर दूर और दूर

कोई भी दूर
मैं खुद दूर हूं कोई क्यूं नहीं दूर

कहीं कहीं से दूर
ब्रहम ब्रहमांड से दूर है

उर्जा उर्जा सांस से दूर
प्रेम उल्फत प्यार भी दूर है

वादों वचनों से दूर
अंग रंग तरंग से दूर है

यह कैसा सत्य
जो दूर दूर दूर दूर है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह नहीं जीया

वह नहीं जीया

आज नहीं जीया

कल नहीं जीया

जन्म नहीं जीया

अजन्म नहीं जीया

जिया जिया कब जीया जाएं?

कौन बताएं?

इन्होंने ऐसा जीया

उन्होंने ऐसा जीया

हर जिया से कुछ कुछ जीया

इन्होंने कहा ऐसा जीओ

उन्होंने कहा ऐसा जीओ

हर कोई ने अपनी समझ से जीया

मैं भी जीया अपनी समझ से

पर

नहीं जीवन नैया पार लगाय

आज भी हर कोई कहे

कैसे जीवन नैया पार लगाय?

जनम जनम से यह कहे

जीवन नैया पार लगाय

युग बीतें धर्म बीतें

बीतें सारे ब्रह्मांड

आज भी यही सुनु

ऐसे जीया जाएं

ऐसे जीया जाएं

ऐसे जीया जाएं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भक्ति "

भक्ति का अर्थ वही समझ सकता है जिन्हें अपने जीवन के सारे खेद और भेद मिटाएं 🙏

कोई भी भक्त चरित्र ले ले

मीराबाई 🙏

शबरी 🙏

सोक्रेटिस 🙏

अष्टसखाएं 🙏

और ऐसे कहीं है 🙏 जो हमारे जीवन को सदा प्रेरणा देते है 🙏

जीवन आनंदमय जीने का यही रहस्य है कि

" भेद और खेद मिटाएं "

जीवन का उत्तम पुरुषार्थ यही है 🙏

जो धर्म में भेद लाएं

जो कर्म में भेद करें

जो धर्म में खेद दिखाएं

जो कर्म में खेद वर्ताएं

वह नहीं तो धर्म है - नहीं तो कर्म है 🙏

यार! सच में 🌷

भेद मिटाएं 👍

खेद मिटाएं 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" लग्न - आमंत्रित - बाराती "

लग्न - यह कैसी निधि है? यह कैसी विधि है? यह कैसी तिथि है?

आमंत्रित - यह कैसा आमंत्रण है? यह कैसा आचरण है? यह कैसा आकरण है?

बाराती - यह कैसी बा-राती है? यह कैसी सा-राती है? यह कैसी विरासती है?

रीति रिवाज - आडंबर - भेद भरम और व्यापार से हम इतने लपेटाएं - इतने भरमाएं - इतने असहाएं की खुद बिकाएं - खुद लुटाएं - खुद मिटाएं

और आखिर

जनाजा 🙏

बिकाना 🙏

खोजाना 🙏

हम क्या है? हम बाराती है? हम आमंत्रित है? हम लग्निक है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

सोचें 🙏

हां! अवश्य सोचें 🙏

मुझे लग्न - आमंत्रण और बारात समझने से ही मेरा जीवन सुलझा रहेगा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन किसीको क्या कहें?

हर कोई जानकार - हर कोई समझदार

खुद की नजर में न कोई तकलीफ़

खुद की समझ में न कोई मुसीबत

चाहें ओर की नजर में हो तकलीफ़ - हो मुसीबत

ओर कहें - संभलो - संभालों - संवरो

तो समझें - क्यूं परेशान हो हमसे?

हम जीएं हमारी तरह!

हम जीएं हमारी डगर!

क्यूं करें हमसे बसेरा?

यहां तो मेरा नसीब! मेरा भाग्य! मेरा जीवन!

नहीं कोई अकेला! नहीं कोई जगेला!

आप अपना करों - आप अपना संभालों

मेरी नियति मेरी कृति मेरी रीति मेरी वृत्ति

क्यूं करों हैरान - क्यूं करों परेशान!

मुझे जीना मेरे हक़ से

मुझे रहना मेरे मन से

क्यूं करों बार बार एकरार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आज का जीवन - आज का मन

आज का नैन - आज का तन - आज का धन

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज से सीखा रिश्ता जोड़ने का

धरती से सीखा रिश्ता निभाने का

आसमां से सीखा रिश्ता रंगने का

सागर से सीखा रिश्ता सिंचने का

हवा से सीखा रिश्ता महकाने का

हम आनंद आनंद और आनंद है

हम रंग रुप और शृंगारमय है

हम सुख संपत्तिवान और सन्मानिय है

हम गंध सुगंध और महकते है

हम एक एकात्म और एकमय है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भीष्म पितामह " 🌷🙏🌷

अनोखा चरित्र हिन्दू संस्कृति का 🙏

वीर योद्धा!

संस्कृति विजय!

संस्कार शिक्षा!

कर्म पारदर्शिता!

गहराई से सोचें

भीष्म पितामह का मृत्यु 🙏 तीरों से

श्री कृष्ण का मृत्यु 🙏 तीर से

श्री राम का मृत्यु 🙏 स्व समर्पण सर्यू नदी 🙏

कहीं विचारकों, अध्ययन आत्माओं,

कहीं चिंतनको, कहीं भक्तों।

कहीं ने अपनी अपनी धारा से बताया और कहा 🙏

कर्म का फ़ल 🙏

यह सत्यता से पर है 🙏

यह आत्मज्ञान से पर है 🙏

कुछ अलग है 👍

अवश्य अलग है 🙏

जीवन के कहीं माध्यमों, परिस्थितियों, परिवर्तनों और परमानंद सिद्धांतों को उथामे

कोई आनंदमय धारा अवश्य पायेंगे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो भी चरित्र पढ़ते है - समझते है तब अवश्य ऐसा होता ही है कि

सूरज काले घने बादलों से ही निकलता है

कमल काले घने कादव में ही खिलता है

गुलाब अनेक कंटकों में ही खिलता है

तवंगर अनेकों परिस्थितियों में ही उभरता है

हम भी जीवन की अनेकों थापट से ही खड़े रहते है

हां! जीवन का पुरुषार्थ मंत्र हमें हर उत्तम फल दे सकता ही है - चाहें निधि और विधि की कोई भी कोशिश हो 🙏

हम जीवन जीत ही सकते है 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे श्री यमुना!
तेरा ही स्मरण धायो
चित द्रष्टि शरणं धायो

पुष्टि धात्री यमुना
तेरा चरित्र पद पद गायो
धन्य धन्य पुष्टि जीवन आयो

महाराणी श्री यमुना!
तेरा दर्शन मुझ नैन पायो
अंग अंग तनुनवत्व पायो

ठकुराणी श्री यमुना!
कृपा जलधि संश्रिते ठायो
मम मन: सुखं भवायो

व्रजराणी श्री यमुना!
न जातु यम यातना ढायो
जन्म जीवन समस्तदूरितक्षयो

हे कालिंदी!
हे पावनी!
हे भगिनी!
हे गोपी!
हे भक्ति वर्धिनी!
" Vibrant Pushti "
" जय श्री यमुना " 🌷🙏🌷

६० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

७० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

८० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

दोस्तों! हम संस्कृति आधारित सोचें 🙏

दोस्तों! हम जीवन के हर पड़ाव आधारित सोचें 🙏

दोस्तों! हम हमारी जगत उपस्थित आधारित सोचें 🙏

दोस्तों! हम हमारी उपलब्धियां आधारित सोचें 🙏

" भगवान के पास जाना है "

उनका ज्यादा स्मरण करे और ज्यादा स्मरण में रहे तो

भगवान अपने भक्त से पूछे?

हे भक्त! तुने हमें कितना याद किया?

हे भक्त! तुने हमारे लिए क्या क्या करवाया?

हे भक्त! तुने हमारी स्थलों की कितनी यात्रा की?

कैसी मान्यता? 🙏

उम्र हमने अपने आप ६०,७० और ८० कर दी 🙏

दोस्तों! यही मानसिकता से हम संसार को कहां ढकेलते है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वैष्णव " मैं एक हिन्दुस्तानी और मेरा जन्म एक वैष्णव कुल में हुआ, ऐसा मैंने अपने माता-पिता के कहने से जाना 🙏
जब मैंने श्री नरसिंह मेहता रचित भजन सुना " वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड पराई जाने रे " पर दु:ख उपकार करे तो भी मन नहीं आणे रे "
मैं तो चकित हो गया 🤔
मैं भी जैसे जैसे बड़ा होता गया और समझता गया
ओहहह! कितना अनोखा और अदभुत संस्कृति और सभ्यता और संस्कार 🙏
जैसे जैसे जीवन की ऐसी कक्षा पर पहुंचा जहां मुझे हर समय, संजोग, संयोग, परिस्थिति, विचार, आचार, राग, व्यवहार समझ में आने लगा 🙏
यह वैष्णव जन्म तो सभी के है
यह वैष्णव जन तो सभी है
जितना मैं जानता हूं इतना तो हर कोई जानते है 🙏
मैंने कहीं बार अपने आपको सोचा
मैंने कहीं बार कुटुंब से सोचा
मैंने कहीं बार समाज से सोचा
पर
वैष्णव का अर्थ और वैष्णव का धर्म कहीं नहीं जाना 🙏
शास्त्रों में पढ़ा
प्रवचन में सुना
पर असंगत 🙏
सोचता रहा, पूछता रहा पर केवल कहीं सीमित धारी 🙏
तब ऐसा लगा
" सकल लोक मां सहु ने वंदन 🙏 "
वैष्णव खुद को ही संवरना, खुद को ही जगाना, खुद को ही जानना, ख़ुद में ही पाना और खुद में ही समाना 🙏
क्रमशः
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा राधा!   राधा राधा! "

राधा का सुमिरन आनंद आनंद बिखराएं

राधा का मनन महक महक बिखराएं

राधा हमारी रानी! राधा हमारी बानी!

" राधा राधा! राधा राधा! "

" राधा राधा!   राधा राधा! "

राधा का दर्शन रंग रंग उड़ाएं

राधा का अर्चन संग संग खेलाएं

राधा हमारी प्यारी! राधा हमारी दुलारी!

" राधा राधा!   राधा राधा! "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधे " 🌷🙏🌷

जब भी कोई जाओ वृंदावन

मेरा संदेश सुना देना

जगत जगत ब्रह्मांड ब्रह्मांड मैं घुमु

वृंदावन रज मैं न छू पाया

एक एक रज का एक एक स्पर्श

मेरे दिल को न भूल पाया

जहां भी जाऊं जहां भी छूऊं

वृंदावन वृंदावन ही छू पाया

कोई रज पुकारें कान्हा

कोई रज पुकारें राधा राधा

रज के बिन मैं नहीं कान्हा

बिन रज के मैं नहीं माधवा

रज से ही हूं मैं गोविंदा

रज से ही हूं मैं गोपाला

जहां मेरा प्रियतम वहीं है रज

जहां मेरा प्रेम वहीं है रज

जब भी कोई जाओ वृंदावन

मेरा संदेश सुना देना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम "

राम अर्थात सेवक

राम अर्थात साथ

राम अर्थात त्याग

राम अर्थात नि:संदेह

राम अर्थात न्याय

राम अर्थात वंदन

राम अर्थात प्रणाम

राम अर्थात दास

राम अर्थात संस्कार

राम अर्थात विवेक

राम अर्थात विनय

राम अर्थात समानता

राम अर्थात संवेदना

राम अर्थात विद्यार्थी

राम अर्थात पुरुषार्थ

राम अर्थात समर्पण

राम अर्थात मित्र

राम अर्थात भाई

राम अर्थात पति

राम अर्थात पुत्र

राम अर्थात सत्य 🌷🙏🌷

राम पधारे हममें - राम पधारे हमसे 🙏

राम पधारे हर एक में - राम पधारे हर एक से 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मर के निकलना था सांवरिया के घर

जीते जी निकलना पड़ा यह संसार के द्वार "

कैसा अभागे है हम

जनम जनम बार बार पायो

हर बार जीते जी मर कर निकले संसार के द्वार

कितना जनम! कितने जन्म!

कब निकलुंगा सांवरिया के द्वार?

हर कोई रोएं बिन मेरे

न कोई रोएं सांवरिया बिन

कैसा अभागा जगत मेरा

जो मैं सदा भटकुं बिन सांवरिया

थामलुं यह घड़ी प्रियतम सांवरिया की

जो घड़ी घड़ी सांवरिया पास आएं

हाथ पकड़ लिया ऐसा श्यामा!

अब मरुं तो सांवरिया के ही द्वार

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज हमारा मन, तन, नैन और जीवन केवल अर्थोपार्जन और अर्थोपार्जी है 🙏
हम कोई भी तुलना करते है तो अर्थोपार्जी से ही करते है, न कोई वैज्ञानिक, न कोई तकनीक, न कोई शिक्षात्मक, न कोई योग्यिक माध्यम से करते है 🙏
कुटुंब - अर्थोपार्जी
समाज - अर्थोपार्जी
व्यवसाय - अर्थोपार्जी
मित्रता - अर्थोपार्जी
विद्वत्ता - अर्थोपार्जी
धर्म - अर्थोपार्जी
वर्ण - अर्थोपार्जी
जीना - अर्थोपार्जी
मरना - अर्थोपार्जी
प्रसंग - अर्थोपार्जी
व्यवहार - अर्थोपार्जी
स्वाभाविक है कि हर कुछ अर्थोपार्जी ही होता है 🙏
इसलिए -
कुटुंब बिखराया
समाज भटकाया
धर्म छूटाया
संस्कार घुंटाया
जो भी हो अर्थोपार्जन से🙏
हम अशांत
हम डरपोक
हम रोगी
हम असंतोषी
हम असंगति
हम निराशावादी
हम एकलवादी
हम मायावी
हम संदेही
हम अपराधी
हम दोषी
हम ढोंगी
हम अहंकारी
हम निराधार
हम निराधिकारी
हम स्वार्थी हो गये 🙏
जो भी देखें अकेला, अकेला, अकेला 🙏
है रास्ता 👍 अनोखा और उत्तम रास्ता
क्रमशः
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री श्रीनाथजी आपके शरण में रहूं 🙏

श्री श्रीयमुनाजी आपके स्मरण में रहूं 🙏

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी आपके चरण में रहूं 🙏

आपके शरण में, आपके शरण में,

आपके शरण में, आपके शरण में,

आपके शरण से मैं पाऊं गोलोकधाम

श्री श्रीनाथजी आपके शरण में रहूं 🙏

आपके स्मरण में, आपके स्मरण में,

आपके स्मरण में, आपके स्मरण में,

आपके स्मरण में मैं पाऊं तनुनवत्व प्रेम

श्री श्रीयमुनाजी आपके स्मरण में रहूं 🙏

आपके चरण में, आपके चरण में,

आपके चरण में, आपके चरण में,

आपके चरणों में मैं पाऊं पुष्टि सृष्टि नाम

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी आपके चरण में रहूं 🙏

श्री श्रीनाथजी 🙏 श्री श्रीयमुनाजी 🙏

श्री श्रीयमुनाजी 🙏 श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏 श्री श्रीनाथजी 🙏

श्री श्रीनाथजी 🙏 श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहहह अनगिनत मन!

अनगिनत विचार!

अनगिनत अर्थ!

अनगिनत समझ!

अनगिनत स्वीकार!

अनगिनत विमर्श!

अनगिनत समय!

अनगिनत संजोग!

अनगिनत परिस्थिति!

अनगिनत राह!

अनगिनत चाह!

अनगिनत द्रष्टि!

अनगिनत द्रष्टांत!

अनगिनत धारणा!

सच! हम कैसे जीएं है! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथद्वारा की दूरी
मन से तेरे आंगन की दूरी
नयन से दर्शन की दूरी
एक झांकी नजर की दूरी
समय समय की दूरी
विरह वेदना की दूरी
कैसी यह जन्म की दूरी
तेरे प्रेम की दूरी
तेरे निकट की दूरी
कैसे तोड़ूं हमरी दूरी
दूर दूर से स्मरु दूरी
तेरे स्मरण से कटे दूरी
कैसी तेरी लीला की दूरी
कर कोई कृपा छूटे दूरी
मुझे तेरी चरण की दूरी
मुझे तेरे शरण की दूरी
मन दौड़ कर तोड़ूं दूरी
डग भर कर दूर हो दूरी
आया मैं आया तोड़ने दूरी
आया आया आया आया
दूरी दूरी दूरी दूरी दूरी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
आ गया तेरे द्वार
हे नाथ! आ गया तेरे द्वार
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

निरख निरख कर मेरे नयन अपलके

तरस तरस कर मेरे नयनन बरसे

तेरो ऐसो कैसो दीदार

मेरे नयन न झुकें झुकें झुकें

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

द्वार द्वार पर मेरे चरण अटके

तेरी झांकी मेरे मन को रोके

तुने कैसो कियो शृंगार

मेरी नज़र न भटकें भटकें भटकें

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

एक एक अंग पर तेज़ स्फूरे

सारा वदन मुझे तेरी ओर खिंचे

तेरी लीला अनोखी अपरंपार

मुझे कर दिया बावरी ही बावरी

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृपा तु करें इतनी

ख्याल रखें तु इतना

जबतक सांस लिए

तबतक तु संवारें

न कोई अवज्ञा

न कोई भेदभाव

न कोई पराया

न कोई प्रकार

न कोई भ्रमार

न कोई बहाना

न कोई देर

न कोई वैर

न कोई अवैध

न कोई अज्ञान

न कोई अधर्म

केवल सिद्धांत

केवल कर्म निरपेक्ष

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे श्री नाथजी!

यही कृपा निधि से ही हम भी आचरणे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" મમતા ભરેલી માં "

જેનું હૃદય કેવળ કુટુંબનાં દરેક સભ્ય માટે ધડકે 🙏

જેની ધડકન સદા કુટુંબનાં દરેક સભ્ય નું સુખ જ ઝંખે 🙏

જેનું મગજ કુટુંબનાં સર્વે સભ્યો નાં ઉલ્લાસ માટે કાર્ય કરે 🙏

જેની આંખો કુટુંબનાં તમામ સભ્યોની વ્યવસ્થા માટે જ જુએ 🙏

જેનાં શ્વાસ કુટુંબનાં એક એક સભ્ય માટે જ બલિદાન કરે 🙏

જેનાં હાથ કેવળ કુટુંબમાં 'સર્વે સુખી ભવંતુ' માટે બળે 🙏

જેનાં પગ સદા કુટુંબની સેવા માટે જ દોડે 🙏

જેનાં વિચાર કેવળ ને કેવળ એક જ ધારા માં વહે - મારાં બાળકો સદા આનંદમય 🙏

જેનાં શબ્દોમાં કેવળ નિઃસ્વાર્થ ભાવ જ ભર્યો હોય 🙏

જેને આપણે કાંઈ પણ કહીએ અને ક્ષમા કરે 🙏

જે પોતે અધૂરું જીવે અધૂરું પામે તો પણ આનંદમય 🙏

જે કેવળ મમતા જ લુટાવી જાણે 🙏

હે માં! તને પ્રણામ 🙏 પ્રણામ 🙏 પ્રણામ 🙏

અમારાં કુટુંબમાં આવો 'આત્મા'

ઓહ્હ્હ! પરમાત્મા 🙏 પરમાત્મા 🙏 પરમાત્મા 🙏

જો હું જ્ઞાની, જો હું સમજું, જો હું વફાદાર હોઉં

તો હે કુટુંબીજનો! આપણે સહું આ આત્મા ને સદા આનંદમય રાખીએ 🙏

આ જ આપણું કર્તવ્ય અને સેવા 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

तेरी बंसी का सूर मुझे बनाले श्याम

तेरे अधर पर मैं चिपक जाऊंगी

तेरे उंगली की नर्तकी बनाले श्याम

तेरी एक एक धून पर बिखर जाऊंगी

तेरे ख्यालों की तस्वीर बनाले श्याम

तेरे तिरछी नज़र नैनों में बस जाऊंगी

तेरे गीतो की धून बनाले श्याम

तेरी हर तर्ज़ संगीत में लहर जाऊंगी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्यामा ने कहा श्याम से
तु मथुरा जा रहा है
हमें छोड़ कर!
कैसे?
तुने जितना मन चुराया
तुने जितना चित्त चुराया
तुने जितना प्रेम चुराया
तुने जितनी धड़कन चुराई
तुने जितनी सांसें चुराई
तुने जितनी मधुर चुराई
तुने जितना रंग चुराया
तुने जितना संग चुराया
तुने जितना विरह चुराया
तुने जितनी यादें चुराई
तुने जितनी नांदे चुराई
तुने जितनी सादे चुराई
तुने जितना स्पर्श चुराया
तुने जितना हर्ष चुराया
तुने जितना उत्कर्ष चुराया
तुने जितनी आंचल चुराई
तुने जितनी पायल चुराई
तुने जितनी कायल चुराई
तु ही कहे
तु कैसे दूर जा सकता है?
तु चाहे तो भी तु दूर नहीं
तु धुत्कारे तो भी दूर नहीं
तु ठुकरावे तो भी तु दूर नहीं
एक क्षण तेरी
एक लक्षण तेरा
एक शिक्षण तेरा
एक प्रतिक्षण तेरा🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
तु चाहें कुछ भी समझे
तु चाहें कुछ भी करे
तु चाहे कुछ भी सोचे🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
साथ साथ
हाथ में हाथ
बाथ में बाथ🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
यही तो तेरी लीला है
यही तो तेरी शृंखला है
यही तो तेरी छबीला है🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हे प्रियतम! तु दूर नहीं है 👍🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण भक्त "

कृष्ण भक्त कौन? क्यूं? और कैसे?

कृष्ण भक्त का अर्थ ऐसा न समझना कि वह हिन्दु है 🙏

कृष्ण भक्त का अर्थ ऐसा न मानना कि वह हिन्दु धर्मि है 🙏

कृष्ण भक्त का अर्थ है वह -

वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे 🙏

परदु:खे उपकार करे तो भी मन नहीं आणे रे 🙏

सकल लोक मां सहुने वंदन 🙏

निंदा न करे कोई नी रे 🙏

क्रमशः 🙏

अर्थात जो जीव - जो मनुष्य श्री कृष्ण के जीवन सिद्धांत आधारित जीवन व्यतीत करे वह कृष्ण भक्त 🙏

जबसे जन्म पाया वहीं पल से वह प्राथमिक वैष्णव जन 🙏

यही ही मूलत्व है श्री कृष्ण भक्त का🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चंद्र " प्रेम की कल्पना को साकार किया 🌷

" चंद्र " शीतलता के स्पर्श को महसूस किया 👍

" चंद्र " मिलन की पराकाष्ठा पा ली 😘

" चंद्र " पुष्टि पुरुषार्थ की अलौकिक उपलब्धि 👍

" चंद्र " प्रीत का कोई भी ख्याल अवश्य पवित्र ही है 🌷

" चंद्र " सत्य और सिद्धांत का विज्ञान सदा साक्षात्कार की ही अनुभूति करवाता है 🙏

" चंद्र " द्रढ विश्वास भरा हर कदम पर मंज़िल ख़ुद ब ख़ुद स्व को समर्पित करता है 👍

" चंद्र " हर तत्व को रुपांतर कर सकते है 👍

अभिनंदन 👍 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

नैन - विशुद्ध

मन - स्थिर

तन - पवित्र

धन - योग्य

जीवन - पुरुषार्थ भरा

आत्मा - प्रज्वलित

प्रेम - निरपेक्ष

धर्म - सिद्धांत

जन्म की सार्थकता यही है 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चांद को छूआ

मैंने मेरे प्रियतम के पैर छुए

चांद को निहारा

मैंने मेरी प्रीत को संवारा

चांद को पूछा

मैंने मेरे प्रेम को इशारा

चांद को कहा

मैंने मेरी उल्फत को पुकारा

चांद को छुपाया

मैंने मेरे प्रिये को बचाया

मेरा पिया चांद है

मेरी प्रेम पवित्र है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

सदा मधुर मधुर हास्य

सदा मार्गदर्शक सिद्धांत चालक

सदा करुणानिधि सत्य रीति

सदा अखंडानंद स्वराटानंद

सदा सन्मानिय संरक्षणाव्यूहा

सदा प्रेमी सदा विरही

सदा पुरुषार्थी विद्यार्थी

सदा भक्त वत्सल भक्त वर्धक

सदा मददनिश जगधाधिश

सदा संस्कृति उपासक निर्देशक

सदा प्रेमी पूजनीय सविनयी

सदा परोपकार जगदाधार

सदा प्रिये सदा ज्ञेय

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हे कान्हा!
तुझे न कोई पल भूलाया
तुझे न कोई क्षण छोड़ा
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
ऐसा क्यूं?
क्यूंकि जिससे मेरा जीवन संवरें
क्यूंकि जिससे मेरा मन एक चित्ते
क्यूंकि जिससे मेरा तन पवित्रे
क्यूंकि जिससे मेरा धन योग्ये
क्यूंकि जिससे मेरा नैन विशुद्धे
क्यूंकि जिससे मेरा आत्म प्रकाशे
क्यूंकि जिससे मेरा स्वर मधुरे
क्यूंकि जिससे मेरा सांस महकें
क्यूंकि जिससे मेरा कर्ण सतेजे
क्यूंकि जिससे मेरा धर्म सेवे
क्यूंकि जिससे मेरा कर्म निरपेक्षे
क्यूंकि जिससे मेरा रंग श्यामे
क्यूंकि जिससे मुझसे प्रेम पांगरे
क्यूंकि जिससे मेरी प्रतिज्ञा पूर्णे
क्यूंकि जिससे मेरी वृत्ति सोहाये
क्यूंकि जिससे मेरी द्रष्टि समाने
क्यूंकि जिससे मेरी सृष्टि उत्कृष्टे
क्यूंकि जिससे मेरी पुष्टि शरणे
सच!
हां बिलकुल सच!
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! आन बसो यह तन मन नैनन में

मेरी प्रीत पुष्टि हो गई तेरे शरणं में

कान्हा! आन जगो यह द्रष्टि में

मेरी नज़र एक हो तेरे दर्शन में

कान्हा! आन बहो यह तन धरा पे

मेरा अंग अंग गुल जाएं तेरी सेवा में

कान्हा! हे कान्हा! 🌷🙏🌷

कान्हा! आन रंगों मेरे प्रेम रंग में

मेरी प्रीत लुटो हर विरह वेदना में

कान्हा! आन रुको जीवन निकुंज में

मेरी उम्र बीते तेरी घट घट लीला में

कान्हा! आन छेड़ो मधुर तान बंसी की

मेरे स्पंदन दौड़े तेरे मधुर मिलन में

कान्हा! हे कान्हा! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नीश दिन हो ख्यालों में

कैसे छूपे रहते हो ओ मेरे प्रियतम?

सांस सांस हो बस में

कैसे छोड़ोगे दामन ओ मेरे प्रियतम?

कौन कहता है तुम बिन हूं

घड़ी घड़ी मुझसे खेल रहे हो

कैसे दूर करें तुमसे कोई ओ मेरे प्रियतम?

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

कान्हा! मेरा प्रेम है ऐसा उजागर

चाहे कोई अंधेरा भटक कर आएं

वह भी प्रेम ज्योत बन कर

मेरे साथ जाग जाग कर उजियारे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

केशवा माधवा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा!
गोविंदा हे गोविंदा
मुझे ले चलो संसार पार
मुझे ले चल जगत बाहर
केशवा माधवा
हे कृष्ण गोविंदा! 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
मुझे ले चल निकुंज द्वार
मुझे ले चल वृंदावन धार
मुझे ले चल वृंदावन धार
मुझे ले चल वृंदावन धार
हे कृष्ण गोविंदा! 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
गोविंदा हे गोविंदा
मुझे आना है गोकुल धाम
मुझे आना है प्रेमलीला गांव
मुझे आना है यमुना पार
मुझे आना है गोवर्धन धाम
हे कृष्ण गोविंदा 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा!
गोविंदा हे गोविंदा
केशवा माधवा 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

काली अंधियारी रात्रि आ रही है

कहीं भक्तों की वेदना याचती है

कहीं पुष्टि जीवों की सेवा स्पर्शती है

कहीं ज्ञानी आचार्यो की श्रेष्ठता जागती है

कहीं वैज्ञानिक सिद्धांतों की सिद्धि प्रमेयती है

कहीं प्रज्ञानी जीवों की द्रढता निश्चिती है

कहीं तत्वों की परिवर्तनता प्रवर्ति है

हमारे परम प्रेमी प्रियतम पधार रहे है

हमसे धर्म संस्थापने हमारे वचन निभाने

सिर पर मोर मुकुट धरें अधर पर बंसी बजाये

तिरछी नजर मिलायें पग पर पग टेडे

सदा खड़े रह कर सदा भक्त वत्सल हो कर

हमारे जीवन में प्रेमोन्माद भरने

हमारे आंगन में प्रेम लीला रचाने

हमारे तन मन धन में सुख लुटाने

हमारे आत्मा से आत्म मिलाने

जन्म जन्म की विरहता नष्ट करने

पधार रहे है पधार रहे है पधार रहे है

आओ आज से हमारे तन मन धन तैयार करें

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज " पवित्रा एकादशी " के पुष्टि प्राकट्य दिन पर सर्वे पुष्टि जीव को हमारा दंडवत प्रणाम 🙏

वैष्णव जन से वैष्णवता जगे

जगे जीवन पुष्टि मय पुष्टि जय

श्री वल्लभ श्री विठ्ठल श्री यमुना

मार्ग से मिलावे श्री गोवर्धन नाथ

एक एक सांस पुष्टि सिद्धांत जतायें

ब्रह्म ब्रह्म से परब्रह्म में समायें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक संदेश आया

एक सूचना मिली

परंपरा है 🙏

" हवेली में यह समय पर श्री ठाकुरजी को और श्री आचार्य या गुरु को पवित्रा पधराना है " 🙏

ठहरो 🙏

" पवित्रा " का अर्थ और व्याख्या समझ कर पवित्रा पधराना होता है 🙏

पुष्टि मार्ग का सिद्धांत को अनुशासित करके यह क्रिया हमें करनी है 🙏

हमें अंधे हो कर - हमें अशिक्षित हो कर एक घेंटा की तरह नीची मूंड़ी करके झुकते झुकाते करते रहना दोषों से भरा है, हमारी हर समझ और क्रिया दोष निवारण होनी ही हमारी योग्यता है 🙏

पुष्टि मार्ग सिद्धांत कहता है

पहले अपने घर पधराये हुएं श्री ठाकुरजी को पवित्रा अंगीकार करना है 🙏

उसके बाद घर के हर सदस्य को यह क्रिया आचरण करवानी है 🙏

हमारे सेवकीय श्री ठाकुरजी ही हमारे प्राधान्य है 🙏 वही ही निधि स्वरुप है, हमारी आस्था और श्रद्धा विश्वास से ही है 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी ने प्रथम पवित्रा अपने सेवकीय श्री ठाकुरजी को अंगीकार करके ही श्री दामोदर हरसानीजी को शिक्षित किया और पुष्टि सिद्धांत रीति सिखाई 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" રક્ષાબંધન "
રક્ષણ નું બંધન
રક્ષણ કોણે કોનું?
રક્ષણ ની આવશ્યકતા કેમ?
મિત્રો 🌷🙏🌷
આપણી સનાતન સંસ્કૃતિ સત્ય - વિશ્વાસ અને સિદ્ધાંત નાં આધારિત છે 🙏
દરેક ક્રિયા માટે શાસ્ત્રોક્ત સિદ્ધાંત છે.
જે કેવળ આનંદ જ પ્રક્ટ કરે છે.
" રક્ષાબંધન " આ એક શાસ્ત્રોક્ત સિદ્ધાંતમય તિથિ છે - ઉત્સવ છે - સત્ય છે.
કોઈપણ જિજ્ઞાસા કરો પણ જ્યાં સત્ય અને સિદ્ધાંત છે તેને કોઇ તર્ક નથી 🙏
" રક્ષાબંધન " તિથિ અને ઉત્સવ જે સ્વીકાર્યો તેની પ્રારંભિકતા ઋષિ વેદવ્યાસે વામન અવતારમાં બતાવી - રાજા બલિ અને બ્હેન મહાલક્ષ્મી 🙏
અદભૂત સમન્વય 🙏
ભાઈ નું રક્ષણ
પતિ નું રક્ષણ
રક્ષણ નો અર્થ ખૂબજ અનોખો અને દિવ્ય છે 🙏
તકલીફ, મુસીબત, આફત, કષ્ટ, દુઃખ, ત્રાસ, ઉપાધિ, વ્યાધિ વિગેરેથી જ રક્ષણ કરવું એવું નથી.
રક્ષણ નો અર્થ
ઉત્તમ સંસ્કાર આપવા
ઉત્તમ શિક્ષણ આપવું
ઉત્તમ સાથ આપવો
ઉત્તમ વિદ્યા આપવી
ઉત્તમ વારસો આપવો
ઉત્તમ સ્વીકૃતિ આપવી
ઉત્તમ સંબંધ આપવો
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
તન, મન, ધન તો ભૌતિક છે
જે અપેક્ષિત છે તે તો સ્વાર્થ ઉત્પન્ન કરે છે
રક્ષણ તો નિરપેક્ષિત છે 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
રક્ષણ તો પ્રેમ છે 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
આ રક્ષણ ને એક એવા સૂત્ર થી બાંધવા માં આવવાથી કેવળ
નિઃસ્વાર્થ, નિઃસંદેહ, નિઃસંશય જ પ્રક્ટ થાય 🙏
કેવો અદભૂત અને અનોખો ઉત્સવ 🙏
ન કોઈ ભેંટ - ન કોઈ માંગ - ન કોઈ ચંચળતા 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
આ સત્ય અને સિદ્ધાંત થી આ ઉત્સવ ઉજવીએ તો અચૂક આનંદ આનંદ અને આનંદ 👍
ચોક્કસ પ્રયત્ન કરો 🙏
Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું
ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું
ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું

અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ

ફરી ક્યારે મળીશું?
ફરી ક્યારે મળીશું?

શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું

આવું કેવું વચન, આમ કેમ કહો છો?
મારે જીવવું છે શ્રી વલ્લભ સિદ્ધાંતે
મારે રહેવું છે શ્રી વલ્લભ પારાયણે
ઓહહહ!
તો પહેરીએ કંઠી બ્રહ્મ સંબંધ ની
તો મંત્ર સ્વીકારીએ શ્રી કૃષ્ણ શરણં મમઃ નો
આજે નહીં આવતા જન્મે
ચાલો જલ્દી જલ્દી જઈએ
કેમ કેમ? આ તો એક બહાનું છે
નવો જન્મ અમારે પામવાનો છે
ચાલો જલ્દી શ્વાસ ઘટી રહ્યાં છે
ઓહહહ!
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
ફરી ક્યારે મળીશું?
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

दूर दूर और दूर है दुलारी ब्हना
नन्हीं सी प्यारी सी है छोटी ब्हना
चाहे! वह दूर हो चाहे वह पराई हो
पर घड़ी घड़ी ही पास है प्यारी ब्हना

खो गई अपने जीवन में
डूब गई अपने कुटुंब में
पर
सदा छूएं अपने भाई से
दूर से भी खोयें भैया की राह में

एक नन्हा-सा धागा सूत का
दूर से भेजें भैया की रक्षा वास्ते
चाहे वह देश रहे परदेश रहे
आत्मा के तांतणें से बांधे प्रेम रिश्ते

हे ब्हना! मेरी दुलारी ब्हना 🙏
हे ब्हना! मेरी प्यारी ब्हना 👍
तु दूर हो तो भी तेरा भैया तेरे पास है
तु कहीं भी हो तो भी तु मेरे दिल में हो

कोई की ब्हना कोई का भैया
दूर दूर से भी कहीं दूर हो
पर
है सदा निकट आत्मा आत्मा से एकट
प्रेम के धागे से सदा रिश्ता है प्रक्ट
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज सदा स्थिर है

पृथ्वी सदा घुमती है

अर्थात ब्रहमांड के मूल स्थिर है

जो मूल नहीं वह घुमते है

जो मूल नहीं वह परिवर्तन होते है

बस! राधा का प्रेम स्थिर था🙏

बस! आत्मा सत्य स्थिर है🙏

चाहे मन से कितना घुमाओ

चाहे तन से कितना घुमाओ

चाहे धन से कितना घुमाओ

चाहे जन्म से कितना घुमाओ

पर

प्रेम में और प्रेम से स्थिरता है

चाहे कितना छल कपट करो

प्रेम की स्थिरता से ही प्रेम में श्याम सुंदर आयेगा

प्रेम की मधुरता से ही प्रेम में राधा विरह आयेगा

यही सुंदर और विरह ही परमानंद है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ख्यालों में खोयें प्रेम स्पंदन

यादों में आयें प्रेम स्पंदन

पलक में जागे प्रेम स्पंदन

नजर में झुकें प्रेम स्पंदन

हे प्यार! तु ही कहें दिल क्या करें!

गोपी ऐसी रहे

राधा ऐसी रहे

मीरा ऐसी रहे

प्रिये ऐसी रहे

सच कहना कान्हा!

तु कहीं भी हो - ऐसा ही हो!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

आंखें - कितनी अलौकिक, अनोखी और अदभुत 👍
जैसे पलकें खुलें
ओहहह: रंग संग उमंग
जैसे पलकें झुकें
ओहहह! बसा छूपा खोया
फ़िर
द्रष्टि द्रष्टि सृष्टि सृष्टि
विचार विचार नजर नजर
घड़ी घड़ी क्षण क्षण
कदम कदम डग डग
रज रज बूंद बूंद
आरंभ आरंभ प्रारंभ प्रारंभ
चलना चलना चलना
दौड़ना दौड़ना दौड़ना
नहीं कोई रुकावट
नहीं कोई थकावट
बस! चल चल अचल
बस! खल खल सखल
आख़री सांस तक
आख़री आकांक्षा तक
आख़री जिज्ञासा तक
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
है न अलौकिक - है न अनोखी - है न अदभुत 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! ओ कान्हा!

तु मेरी रुह में

तु मेरी सांसों में

ऐसी है प्रीत हमारी

जबसे तु गया गोकुल से

तेरी यादों की विरह में

डूब गई मैं

जैसे मधुर जल में गागरिया

हे श्याम! ओ श्याम!

तु मेरे नैनों में

तु मेरे आंचल में

ऐसी है उल्फत हमारी

जबसे तु गया वृंदावन से

तेरे ख्यालों के सूर में

भटक गई मैं

जैसे पी के अधर से बांसुरिया

हे प्रियतम!

मैं क्या करूं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" कलयुग "

कलयुग का अर्थ है जो जीव में अज्ञानता, मूढ़ता, अविवेक, अंधश्रद्धा, द्वेष, धूर्तता, नग्नता, अतृप्ति, अधमता, दुष्टता, मूर्खता, जटिलता, भ्रमितता, असत्यता, विघटनता, क्रुरता, विलासता, निर्लज्जता, निरर्थकता, व्यभिचारी, पापी, घृणा, नपुंसकता, लंपटता, अराजकता, आदि जो मन तन धन और जीवन को दु:खदायक, कष्टविधायक, विपत्तिआशक, दगाबाज, रोगरोधक, समय पातक हो जाता है।

वह खुदगर्ज, कपटी, लुच्चीत्ता, नफटता, नीचता से अपना जीवन को समृद्ध और शक्तिशाली और प्रभावशाली और विकासमय समझता है।

अपने आपको श्रेष्ठी, उद्यमी, उत्तम और सुखमय, धन भंडारी जीव मानता है।

हे मेरे साथ जी रहे ऐसे जीव! नहीं नहीं 🙏

हम क्यूं अपने आपको विश्वासमय नहीं कर सकते !🙏

हम क्यूं अंधश्रद्धा का सहारा लेकर अपने आपको अयोग्य करे! 🙏

हम क्यूं अपनी द्रष्टि को गंदी करे ! 🙏

हम क्यूं हमारे विचार को भ्रष्ट करे! 🙏

हम क्यूं हमारी क्रिया को विचलित करे !🙏

हम क्यूं हमारे लहूं को पापी करे! 🙏

हम क्यूं हमारे अन्न को दूषित करे! 🙏

हम क्यूं असत्य के सहारे अपने आपको घड़े! 🙏

हम कैसे निपुण हैं जिसमें केवल बनावट हो! 🙏

मेरे मित्र! हमसे समय है - समय तो सदा नि:कलंक है, असंशयी है, असंयमी है, विशुद्ध है, पवित्र है, विश्वनीय है 🙏

हमसे हैं जमाना!

हमसे हैं संसार!

हमसे हैं दुनिया!

हमसे हैं तकदीर!

हमसे हैं तस्वीर!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

संस्कार ही

अपराध रोक सकते हैं,

सरकार नहीं।

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं।

Vibrant Pushti:

મારાં કુટુંબીજનો 🙏

આપણે સહુંએ શિક્ષા પ્રાપ્ત કરી અને જીવન જીવવાની યોગ્ય સમજ કેળવી. આજે આપણે એટલું તો ચોક્કસ ઓળખી શકીએ છીએ કે સત્ય શું? સંસ્કાર શું? આપણે કેવું તૈયાર થવું?

કુટુંબનાં સભ્ય છે

સમાજનાં સભ્ય છે

સંસારનાં સભ્ય છે

જીવનનાં સભ્ય છે

આપણે કેવું બનવું, રહેવું, પામવું, જીવવું અને જીવવા દેવું તે સ્વતંત્ર રીતે પોત પોતાના જ હાથમાં છે.

આપણે જ નક્કી કરવાનું છે કે મારાથી ન કોઈ અસંતોષ, ન કોઈ ગૈર સૈદ્ધાંતિક રીત, ન કોઈ અસંસ્કારી ક્રિયા કે ન કોઈ તકલીફ આવે.

જેનું કુટુંબ યોગ્ય, સૈદ્ધાંતિક, સંસ્કારી અને શિક્ષિત તે કુટુંબ સદા સાથ સાથ જ આનંદ કરે 🙏

આપણે ભાગ્યશાળી છે કે આપણે આ પ્લેટફોર્મ પર ઉભા છે. જેમાં કેવળ સકારાત્મક અને નિસ્વાર્થ સમજથી, સંપૂર્ણ પણે નિખાલસતાથી રહીએ તો કોઈ ને કોઈ તકલીફ જ ના પડે અને કોઈ મુંઝાય જ નહીં. 🙏

સંસારમાં ઘણાં ઘણાં પ્લેટફોર્મોનાં ઉદાહરણ લઈએ તેનાં કરતાં આપણે જ આપણી રીતે નક્કી કરીને જીવીએ તો કેવું?

સર્વે ને સ્વતંત્રતા છે, અધિકાર છે નક્કી કરવામાં 👍

સહું તેનો ઉપયોગ કરી નિખાલસતાથી કુટુંબમાં ચર્ચા કરી સાથે રહે અથવા અલગ રહી જ શકે છે.

જાતે જ નક્કી કરો👍

ઉત્તમ ચકાસણી વ્યક્તિની અને વ્યક્તિત્વની 🌷🙏🌷

" जन्म " " जन्म घड़ी " " जन्मदिन "

हम हिन्दु संस्कृति धरे हुए मनुष्य, हम हमारे धर्म संस्थापक श्री कृष्ण को परब्रह्म परमात्मा समझते हैं 🙏 श्री परमात्मा का जन्मदिन अर्थात हमारा प्रेमास्पद का परमानंद प्रक्ट दिन को हम आनंद आनंद और आनंद उत्सव मनाना और उसमें आनंद लुटाना 👍

" नंद घेर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की "

हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की "

आनंद आनंद आनंद और आनंद

अनोखा दिन - अलौकिक दिन - प्रेमामृत दिन

हर कोई के मन में श्री कृष्ण जागे

हर कोई के तन में श्री कृष्ण उमड़े

हर कोई के नैन में श्री कृष्ण झांकें

हर कोई के रंग में श्री कृष्ण उमंगें

सेवा में श्री कृष्ण स्पर्शे

दौड़े श्री कृष्ण दर्शनें

नाचें श्री कृष्ण आनंदे

हैये श्री कृष्ण प्रेमे

नैनों में श्री कृष्ण रमे

अधरों पर श्री कृष्ण रटे

अंगे श्री कृष्ण स्पंदने

मन में श्री कृष्ण अवतरे

दिल में श्री कृष्ण पधराये

" जन्माष्टमी " की आनंद कामनाएं 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तु आ रहा है

तु आ रहा है

तु आ रहा है

हां! आ रहा हूं

हां! आ रहा हूं

हां! आ रहा हूं

प्रेमी की पुकार से

सखी की गुहार से

सखा की जुहार से

भक्त की प्रार्थना से

विरहन की तड़प से

मिलन की तरस से

सेवक की सेवा से

जीव की याचना से

वैष्णव की वेदना से

आत्मा की आनंद से

प्रियतम की लीला से

प्रेम की पूर्णता से

पधारो म्हारे आंगन मेरे श्री कृष्ण

आओ म्हारे नैनन मेरे श्री कृष्ण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मां! ओ मां!

मां! ओ मां!

मुझे आना है तेरी गोद में

मुझे आना है तेरे आंचल में

मुझे आना है तेरे आंगन में

तु अपने आपको ऐसी मैया बना दें

तु अपने आपको ऐसी गोकुल बना दें

तु अपने आपको ऐसी यमुना बना दें

मुझे माखन मिसरी लुटाना है

मुझे आनंद आनंद बरसाना है

मुझे गोवर्धन को रक्षण में धरना है

मुझे व्रज रज में प्रेम रस भरना है

मुझे घर घर दु:खकी बेड़ियां तोड़नी है

मुझे हर जीव में गोपी रुप घोलना है

मुझे धर्म संस्थापना करना है

मां! ओ मां!

मैं आऊं! मैं आऊं!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज कहींओ ने दर्शन पाएं

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने अनुभूति पाई

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने स्पर्श पाया

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आशा पूर्ण हुईं

🌷🙏🌷 आज कहींओ की श्रद्धा बढ़ी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आस्था जुड़ी

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने आनंद पाया

🌷🙏🌷 आज कहींओ की दूरी दूर हुई

🌷🙏🌷 आज कहींओ का चैन लुटा

🌷🙏🌷 आज कहींओ की प्रीत बंधी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की विरहता पूरी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आश बंधी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की प्यास बुझी

🌷🙏🌷आज प्रिये के प्रियतम आ रहा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

पधारो मेरे आंगन 🙏

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

मलक मलक मुस्काएं गोकुल के गोपाल

एक एक गोपी एक एक गोपाल

दौड़े नंद के आंगन

गाएं जय जय गोपाल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

पंखी सुनाएं मधुर मधुर टहूंके

गौएं खन खनाएं घुंघरू रुमझुम

नाचें हर कोई गौवाल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

यमुना की उर्मि आनंद बौछारें

गोवर्धन की शिला तेज बिखराएं

व्रज रज उड़े सलिल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

नंद घेर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की

हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आपके घर पधारे नंद लाल की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हे कान्हा!

नहीं कठिन डगर है तेरे मिलन की

जितनी कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें नैनों में बसा कर पूरा जीवन बिताऊं

यह जीवन में यहां वहां संशय

कैसे मिटाऊं नजर

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें स्मरण में गूंज कर सारा जीवन गुनगुनाऊं

यह जीवन में यहां वहां निंदा

कैसे मिटाऊं कोलाहल

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें मन में जगाएं सारा जीवन मधुराऊं

यह जीवन में यहां वहां कुमति

कैसे मिटाऊं कटुता

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

हे प्रभु!

तेरे ही आशरे तेरे ही सहारे स्व स्व जगाऊं

चाहे जीवन हो घड़ी घड़ी अज्ञान

कष्ट मिटाऊं प्रेमसे

बिछाऊं श्याम डगर जीवन जीने की

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

कौन थक सकता है यह धरती पर

कौन हार सकता है यह धरती पर

कौन खो सकता है यह धरती पर

कौन भटक सकता है यह धरती पर

कौन डर सकता है यह धरती पर

कौन भाग सकता है यह धरती पर

कौन तुट सकता है यह धरती पर

कौन फूट सकता है यह धरती पर

जो आत्मविश्वासी न हो

जो मन स्थिर न हो

जो नैन विशुद्ध न हो

जो तन पवित्र न हो

जो धन विवेकी न हो

जो धर्म सैद्धांतिक न हो

जो जीवन संस्कारी न हो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! एक नज़र क्या मिल गई राधा के नैनों से

न कभी यह नैना मूंदे न बंध हुए

कितनी भी उम्र बीत गई

कितना भी समय कट गया

गोकुल से मथुरा

मथुरा से द्वारका

द्वारका से गोलोक

एक घड़ी न तु बिसराई

एक घड़ी न तु बिछडाई

कितनी रानी हो गई

तु कदी न भूलाई

प्रीत की सच्चाई

मेरे अंग अंग जलाई

आत्मा से परमात्मा सगाई

हे राधा! तु ही प्रेम समाई

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सजन रे झूठ मत बोलो "

ओहहह! हम अपने आपको " सजन " कहे - कहलाते - कहलायें तो तो हमें झूठ बोलना ही नहीं है - झूठ बोल ही नहीं सकते - झूठ को तुरंत रोक सकते है, टोक सकते है, चूप कर सकते है 🙏

अगर हम " सजन " नहीं है तो?

तो तो पैदल चल कर जो कर्म का सैद्धांतिक फल पाते हो उसे स्वीकार कर, यहां सबकुछ छोड़कर, जीवन चक्र में जीते रहो 👍

न कोई साथ - न कोई हाथ - न कोई पाथ

चाहे कितनी भी ऊंची उड़ान भरो पर सबकुछ झूठा 🙏

न सलामती - न शांति - न शक्ति

वैर, धृत्कार, नफरत, रोग, दु:ख

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

न झूठ बोलो - न झूठ कहेलावो, न झूठ सुनो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे तत्व में तु " कृष्ण "
मेरे नैनों में तु " कृष्ण "
मेरी नज़र में तु " कृष्ण "
मेरे अश्रू में तु " कृष्ण "
मेरे मन में तु " कृष्ण "
मेरी ख्याल में तु " कृष्ण "
मेरे विचार में तु " कृष्ण "
मेरे स्मरण में तु " कृष्ण "
मेरी जिज्ञासा में तु " कृष्ण "
मेरी क्रिया में तु " कृष्ण "
मेरे कर्म में तु " कृष्ण "
मेरे संकल्प में तु " कृष्ण "
मेरे ज्ञान में तु " कृष्ण "
मेरे चित्त में तु " कृष्ण "
मेरे ध्यान में तु " कृष्ण "
मेरे अधर पर तु " कृष्ण "
मेरे स्वर में तु " कृष्ण "
मेरी जिह्वा पर तु " कृष्ण "
मेरे वचन में तु " कृष्ण "
मेरे सांस में तु " कृष्ण "
मेरे उच्छवास में तु " कृष्ण "
मेरी मात्रा में तु " कृष्ण "
मेरे अन्न में तु " कृष्ण "
मेरे जल में तु " कृष्ण "
मेरे मुख पर तु " कृष्ण "
मेरे अंग में तु " कृष्ण "
मेरे आंचल में तु " कृष्ण "
मेरे आंगन में तु " कृष्ण "
मेरे रंग में तु " कृष्ण "
मेरी सुगंध में तु " कृष्ण "
मेरी धड़कन में तु " कृष्ण "
मेरे दिल में तु " कृष्ण "
मेरे प्राण में तु " कृष्ण "
मेरी भक्ति में तु " कृष्ण "
मेरे हस्त पर तु " कृष्ण "
मेरे कदम में तु " कृष्ण "
मेरे धर्म में तु " कृष्ण "
मेरे अर्थ में तु " कृष्ण "
मेरे मर्म में तु " कृष्ण "
मेरी शक्ति में तु " कृष्ण "
मेरे धन में तु " कृष्ण "
मेरे वरण में तु " कृष्ण "
मेरे करण में तु " कृष्ण "
मेरे काम में तु " कृष्ण "
मेरी पूरण में तु " कृष्ण "
मेरे प्रेम में तु " कृष्ण "
मेरी प्रीत में तु " कृष्ण "
मेरे जीवन में तु " कृष्ण "
मेरे परिवर्तन में तु " कृष्ण "
कृष्ण! हे कृष्ण! कृष्ण! तु ही क्यूं?
क्यूंकि की उन्होंने हर रीत, नीत, हित, क्षित, प्रीत से सर्वत्र पूर्णतः है 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हां! हे प्यार! अभी वही दर्द है

अभी वह दीवानगी है

जो कभी तेरी बंसी पर दौडता था

पर जबसे तु राजा बन गया

तो मैं गौवाल बन गया

आज भी वही गोवर्धन पर गैया चराता हूं

क्यूंकि मुझे पता है

की तु आयेगा एक दिन गौचाराहा हो कर

और

तु ढूंढ़ेगा सखा बचपन के

मैं ही मिलुंगा वह यमुना निकुंज तट

जहां तु पायेगा एक दुपट्टा पीला

जो यादें दिलायेगा ऐसी प्रीत की

जो कहती है

मेरी प्रीत से चाहे कर लो मन चाही दूरी

पर यह सखा तो यूं ही है

जो तेरी राधा तुझमें जगा दे 🌷

सत्य का सिद्धांत ऐसा अवश्य है

कि शिक्षित होना और जो ज्ञान विषय की निपुणता में ही साथी हो तो जीवन मधुर हो जाएं

बाकी जीना तो भरोसा पर निर्भर होता रहता है पर मधुर करने के लिए एक मन, एक चित्त, एक भक्ति, एक नीति, एक वृत्ति, एक कृति और एक समीक्षा तो अवश्य होनी चाहिए 🙏

भगवान पर निर्भर

नसीब पर निर्भर

समय पर निर्भर

धन पर निर्भर

रुप पर निर्भर

से भी उत्तम शिक्षा ही है - शिक्षा है तो ही संस्कार है - संस्कार है तो ही धर्म है और धर्म है तो ही आनंद है

चिंतन से कहे

साथी समकक्ष ही होना चाहिए

अगर कोई कहे कि साथी भगवान तय करते है

नहीं नहीं

अगर ऐसा होता तो श्री कृष्ण जो परब्रह्म है उनका साथी राधा ही क्यूं?

क्यूंकि उन दोनों की सक्षमता, समानता, समांतरता और शिक्षात्मकता एक ही थी 🙏

सोच लो 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो न बन सके वह तु आश है

जो न खत्म हो सके वह तु प्यास है

प्यार की कैसी यह तन्हाई

जो जनम जनम से तेरी सांसों से

भटक भटक कर तेरी आसपास हूं 😪

हे कान्हा! तु इतना कठोर है

जो मेरी एक आह भी तुझे नहीं छूती?

पर

एक बात कह देती हूं

तु कितना भी विरह दे दे

मैं तुम्हें अवश्य पाऊंगी 🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मां " मां तु और घडपण!

नहीं नहीं!

मां कभी भी पौढ़ नहीं हो सकती 🙏

मां कभी जर्जरित नहीं हो सकती 🙏

मां कभी लाचार नहीं हो सकती 🙏

मां कभी अपमानित नहीं हो सकती 🙏

मां कभी मर नहीं सकती 🙏

मां कभी तुट नहीं सकती 🙏

मां कभी बिखर नहीं सकती 🙏

मां अमर है🙏

मां अमृत है 🙏

मां अद्वैत है 🙏

मां की चाहें कितनी भी उम्र हो

मां सदा युवान है 🙏

शायद हमारी उम्र ८० साल की हो तो भी मां की उम्र ४० ही है 🙏

मां को हम डस्ट बिन समझे! नहीं नहीं 🙏

मां का भार हमारी पर हो! नहीं नहीं 🙏

मां का भार ही नहीं होता है और मां का भार कभी लगता ही नहीं है 🙏

अगर जब मां को ऐसा लगे कि मेरे कुटुंबी जनों को मां बोझ लिए या अयोग्य लगे!

अवश्य समझना हम बरबाद हो रहे है

हम दानव हो रहे है

हम निर्धन हो रहे है

हम अधर्मी हो रहे है

हम विदोषी हो रहे है

हम निशाचर हो रहे है

हम नामर्द हो रहे है

हम विकृत हो रहे है

हम अयोनी हो रहे है

" मां " कभी कष्ट नहीं देती

अगर

कोई स्त्री " मां " रुप है तो भी वह तिरस्कृत नहीं कर सकते 🙏

पर

कोई स्त्री " मां " स्वरुप है तो अवश्य वह भगवान है 🙏

अगर किसीको हो या अनुभवे या लगे" मां " मेरे लिए विकृत है तो वह " मां " नहीं पर कोई कर्म का फल है

बाकी " मां " न कोई फल है - न कोई विघ्नकर्ता है - अलभ्य है - अयोग्य है🙏

" मां " उत्तम, सर्वोत्तम, पूर्णोत्तम, पुरुषोत्तम है 🙏

" मां " न संशय - न संकोच, न उद्वेग, न परिस्थिति है, न प्रतिरोधक है, न कोप है, न भोग है, न रोग है, न क्षोभ है, न लोभ है, न संदेह है 🙏

" मां " सिद्धि हैं

" मां " धात्री है

" मां " पवित्र है

" मां " विश्वास है

" मां " सत्य है

" मां " प्रेम है

" मां " आनंद है 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" मां " तुम्हें वंदन🙏 तुम्हें नमन 🙏 तुम्हें प्रणाम 🙏 तुम्हें दंडवत 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

संस्कृति के पुरुषार्थ एक एक रज है

जो एक एक उत्तम नींव को जोड़ती है

वह नींव ऐसे चरित्र से परिपक्व है

जो हर स्पर्श संस्कारों से सिंचित है

यह संस्कारों का तेज ऐसे सिद्धांतों से गुथ्थै है

जो हर सिद्धांत सत्य की आधारशिला है

यह आधारशिला योग्य जीवन की नीति पर है

जो नीति समय समय के अनुभव का निचोड़ है

यह अनुभव ऐसे संजोग और परिस्थितियों से है

जो हर संजोग और परिस्थिति में स्व भूमिका की निपुणता है

यह भूमिका ऐसी शिक्षा से प्रदीप्त है

जो धर्म और कर्म के नियमों में संशोधन है

जीवन जीते हर मनुष्य की योग्यता प्रमाणित है

यही उत्तम जीवन की सार्थकता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

मेरे लिए हवेली मंदिर बनाएं

मेरे लिए सत्संग भवन बनाएं

मेरे लिए कीर्तन स्थली बनाई

मेरे लिए गौशाला बनाई

मेरे लिए यात्रा धाम बनाएं

मेरे लिए धर्मशाला बनाई

मेरे लिए उत्सव बगीचे बनाएं

मेरे लिए स्नान पर्व ओवारे बनाएं

मेरे लिए भजन धून पथ बनाएं

मेरे लिए परिक्रमा मार्ग बनाएं

मेरे लिए प्रसाद कक्ष बनाएं

मेरे लिए सेवा पूजन बैठक बनाई

मेरे लिए प्रार्थना भवन बनाएं

मेरे लिए यज्ञ शालाएं बनाई

मेरे लिए शास्त्रों विवेचन पुस्तकालय बनाएं

मेरे लिए धर्म सभा समाज बनाएं

मेरे लिए एकांतिक शांति भवन बनाएं

मेरे लिए पाठशालाएं बनाई

अदभुत! कितना भाग्यवान हूं मैं की मेरे उत्थान के लिए अनोखी और उत्तम व्यवस्था है 🌷🙏🌷

हां! 🌷🙏🌷

अवश्य! अदभुत! अलौकिक!👍

शांति - प्रेम - आनंद और संस्कार और संस्कृति

अवश्य कहना 🙏 आपके पास समय है?

शांति - अपनी स्थिरता से है🙏

प्रेम - अपनी योग्यता से है🙏

आनंद - अपनी आत्मीयता से है🙏

संस्कार - अपने चारित्र्य से है🙏

संस्कृति - अपने धर्म से है🙏

सोच लो! 🌷🙏🌷

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन की स्थिरता

मन की एकाग्रता

मन की विशिष्टता

मन की मुग्धता

मन की क्षमता

मन की योग्यता

मन की आध्यात्मिकता

मनुष्य का जीवन उत्तम, उच्च, श्रेष्ठ और मधुर बनाता है 🌷

क्षण क्षण मन के परिपक्वता की कसौटी है

यह कसौटी संसारमय से

यह कसौटी प्रकृतिमय से

यह कसौटी सृष्टिमय से

यह कसौटी आध्यात्ममय से होती रहती है

हम मनुष्य को क्षण क्षण परिवर्तन में जागृत रहना होता है

कब क्या हो वह सुद्रढ करने मनको विद्यामय - संस्कारमय - आध्यात्ममय धाराओं से सिंचित करते ही रहना हमारी सर्वोत्तमता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संभावना " कभी यह शब्द को पहचानने की कोशिश की है?

जन्म जन्म इन पर

जीवन जीवन इन पर

भगवान भगवान इन पर

प्रेम प्रेम इन पर

कितना अनोखा और अदभुत शब्द है 🙏

जितनी भी गहराई में जाना हो - जाओ

कितना भी पुरुषार्थ कर लो - करो

कितना भी ज्ञान पा लो - पाओ

कितनी भी भक्ति छू लो - छूओ

अदभुत 🙏 अनोखा 🙏 अवर्णनीय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना के तीर चले
चले यमुना के तीर
एक एक लहर कहें
यहीं है प्रेम संगीत

कान्हा की बंसी बाजे
राधा की गूंजे पायल
मधुर मधुर सूर जागे
यहीं है प्रेम संगीत

रुमझुम रुमझुम गोपी नाचें
धडम धडम मटकी फूटें
प्रीत रीत के गीत गूंजें
यहीं है प्रेम संगीत

हे राधा! हे कान्ह! हे प्रिये!
पुकार पुकार से सृष्टि जागे
खेल कूद में धरती खिलें
यहीं है प्रेम संगीत

घड़ी घड़ी ठहरें
क्षण क्षण रुकें
धारा धारा उभें
यहीं है प्रेम संगीत 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कल भी था मधुर
आज भी है मधुर
आगे भी होगा मधुर
अलौकिक है प्रेम संगीत 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हे यमुना! तेरे स्मरण से
हे यमुना! तेरे ख्यालों से
हे यमुना! तेरे विचारों से
उठें तरंग प्रेम संगीत 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे महेबुब! मेरे महेबुब!

तुने ये क्या कर दिया

आकाश का चांद भी धुंधला दिखाई दिया

गिरते झरना की शीतलता गर्म लगने लगी

धरती की हरियाली लाल हो रही

लहराता पवन अपनी महक खोने लगा

तुझमें ऐसा क्या है? जो मैं तुझमें समानें लगा🌷

तु गोपी है?

तु मीरा है?

की तु राधा है?

तेरी प्रेम लीला से मैं नहीं जन्म ले सकता हूं

तेरे विरह की वेदना से मैं मृत्यु नहीं पा सकता हूं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे प्रिये! मैं क्या करूं 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने आपको तुमने ऐसा बनाया
अपने आपको खुदने ऐसा बनाया
अपने आपको स्वने ऐसा बनाया
संजोग जो तुमने जैसा गुज़ारा वैसे तुम
परिस्थिति जो खुदने जैसी निभाई वैसे तुम
समय जो स्वने जैसा गूंथा वैसे तुम
संजोग कैसे बनें? कोई जीत गया
परिस्थिति कैसे बनीं? कोई पार गया
समय कैसा बना? कोई जूझ उठा
संजोग - जैसे तुमने जीना गुज़ारा
परिस्थिति - जैसे तुमने मन बनाया
समय - जैसे तुमने शिक्षा स्वीकारा
तुम्हारी साथ के संजोग गुजारें
तुम्हारी साथ के परिस्थिति निभाएं
तुम्हारे साथ के समय पसारें
कोई कहीं है कोई कहीं है
कोई ऐसे है कोई ऐसे है
कोई कुछ है कोई कुछ है
क्यूं मैं ऐसा?
यहीं संजोग - परिस्थिति और समय को समझ कर अपने आपको जगा दो और घड दो सैद्धांतिक नियमन
पहुंचते है सही
पाते है सही
हो गएं सही जीवनी 🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
इसे कहते है प्रेमी 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

आ रही है वह घड़ी जो

मेरे मन को मोड़ना है 🙏

मेरे नयन को बिखरना है 🙏

मेरे अधर को सूर बहाना है 🙏

मेरे हस्त को लुटाना है 🙏

मेरे पैर को कदम भरना है 🙏

मेरे अंग को शुद्ध करना है 🙏

मेरे प्राण को आधार देना है 🙏

मेरे हृदय के तेज को जगाना है 🙏

मेरे दिल को प्रेम रंग से रंगना है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा " का आनंद उमंग रंग संग 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सर्वे व्रज परिक्रमा भक्तों को प्रणाम 🙏

" व्रज परिक्रमा "

हिन्दुस्तान के हर कोई व्यक्ति के मुख में यह स्थली सदा गूंजती रहती है 🌷

जो कोई व्यक्ति का जन्म हिन्दू धरती पर हुआ हो और वह यह स्थली को छू कर ही रहेगा 🌷

हिन्दुस्तान के हर व्यक्ति का संकल्प है - व्रज रज पाने का 🌷

कोई कैसी भी कक्षा के हो

कोई कितने भी तवंगर हो

कोई कैसी भी परिस्थिति का हो

व्रज व्रज और व्रज जायेगा

व्रज रज छूएगा 🌷

अनोखी अलौकिक अवर्णनीय अदभुत स्थली - व्रज 🌷🙏🌷

कोई तो ऐसा कहें

" व्रज भाएं ऐसा जो न मुझे चाहें दो मनभावन ऐसा

न छोड़ू व्रज कहीं से

न छोड़ू व्रज हर घट से

मुझे दिजो व्रज में वास मैं वैकुंठ नहीं चाहूं 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अरि ओ! हो हो हो हो हो
प्यार की ऐसी विरहता जलाती है
हर तरफ आग ही आग है
आंखें खुलें तो अगन अगन
आंखें मुंदे तो जलन जलन
आंखें झुकें तो सुलग सुलग
आंखें बंद तो ज्वाला ज्वाला
प्यार का अग्नि भारी
जिससे हूं वारी वारी
दूर है बहुत दूर है
उनके साथ यमुना है
उनके साथ गोवर्धन है
उनके साथ गोकुल है
उनके साथ सखी है
उनके साथ सखा है
उनके हाथ बंसरी है
मैं अकेला भटक भटक रहूं
कभी मथुरा तो कभी द्वारका
कभी कहीं तो कभी वहीं
पर इतना अवश्य कहूं
वह मेरा रंग है
वह मेरा उमंग है
वह मेरे संग है
वह मेरे अंदर है
तभी तो मैं कृष्ण हूं
राधा! राधा! राधा! राधा!
अपने अंदर निहालो - राधा 🌷🙏🌷
राधा! राधा! राधा! राधा!🌷🙏🌷
प्रक्ट भयी प्रिये! 🌷🙏🌷
हे प्रियतम प्रिये! 🌷🌷🌷
राधा! 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
"Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

कहींओ ने कहीं अनुभव पाये है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं स्पर्श पाया है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं योग्यता पायी है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं सेवा जगाई है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं रंग रंगाएं है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं ज्ञान पाएं है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं भाव पाये है व्रज परिक्रमा में 🙏

व्रज परिक्रमा का ख्याल और विचार श्री वल्लभाचार्यजी कि अनोखी अनुकंपा है कि जीव व्रज परिक्रमा करता है 🙏

पुष्टिमार्ग का हर सिद्धांत का प्रमाणित जागृतता - " व्रज परिक्रमा " 🌷🙏🌷

श्री श्रीनाथजी और श्री यमुनाजी की लीलाएं का दर्शन - " व्रज परिक्रमा "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

અતિ અસંવૈધાનિક
અતિ બિનસૈદ્ધાન્તિક
અતિ ગૈરજિમ્મેદાર
અતિ નિષ્ક્રિય
અતિ લાચારી
અતિ ધૂર્તતા
અતિ અપ્રમાણિક
અતિ દ્રષ્ટિહીન
અતિ દુરાચારી
અતિ જુઠ્ઠાણું
અતિ અસહિષ્ણુતા
અતિ મજબૂર
અતિ લોભી
અતિ અજ્ઞાની
અતિ સ્વાર્થી
અતિ અશિસ્ત
અતિ અપરાવલંબી
અતિ આળસુ
અતિ આડંબરી
અતિ અશિક્ષિત
અતિ દ્રોહી
અતિ દોષિત
અતિ નિમ્ન
અતિ વિરુદ્ધ
અતિ અવિવેકી
અતિ બેશરમ
અતિ સંશયી
અતિ બેરહેમી
અતિ અવિશ્વાસુ
અતિ નિર્લજ્જ
અતિ ઘૃણિત
મને લાગે છે કે જેટલા અવગુણો છે તે સર્વે અતિ અતિ માં પણ જો કોઈ એવું વ્યક્તિ કહે " હું આનંદિત છું 👍 "
તો સમજવું કે તે કેવળ હિન્દુસ્તાની છે 🙏
જબરદસ્ત ઉપાધિ 🙏
જબરદસ્ત જીવન 🙏
જબરદસ્ત સમૃદ્ધ 🙏
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🙏 🌷 🙏

" व्रज परिक्रमा "

हर्षोल्लास - आनंद परमानंद - आत्मा परमात्मा - प्रेम प्रेमास्पद 🌷🙏🌷

जबसे समझता हुआ तबसे एक संकल्प मन से किया था - " व्रज परिक्रमा "

आजतक जो पुष्टिमार्ग में श्री वल्लभाचार्यजी और श्री गुसाईजी के ब्रह्म संबंध से जो शिक्षा पाई वह चरितार्थ करने वह तिथि आ गई - वह दिन आ गया 🙏

भाद्र सुद अगियारस - संकल्प करना है 🙏

मेरे जीवन यात्रा की आध्यात्मिक और आत्मीय स्पर्शी यात्रा जिससे यह जीव का परिवर्तन " पुष्टि जीव " में होगा 🙏

मुझे संकल्प लेने की घड़ी से आख़री घड़ी तक केवल श्री वल्लभाचार्य विरचित पुष्टिमार्ग का हर सिद्धांत से हर सांस भरनी है और हर कदम दासत्व की तरह व्यापन करना है 🙏

जीवन की मधुर क्षण - जन्म का संस्कारी पुरुषार्थ पुष्टि पुष्टि और पुष्टि 🙏

मैं कितना भाग्यवान हूं कि श्री वल्लभाचार्यजी के हर कदम पर मुझे चलना है 🙏

एक एक स्थली पर लीला 🙏

एक एक तट पर श्री यमुनाजी पय पान 🙏

एक एक रज से श्री गोवर्धननाथजी दर्शन 🙏

एक एक वनस्पति से श्री वैष्णवता की न्योछावर 🙏

एक एक कण में श्री श्रीनाथजी का चरण स्पर्श 🙏

एक एक गूंज में अष्टसखा कीर्तन 🙏

एक एक रंग में श्री गुसाईजी का संग🙏

अदभुत अनोखा अलौकिक अचंभित 🙏

धन्य धन्य 🌷🙏🌷🌷🙏🌷

हे श्री आचार्य वल्लभाचार्यजी 🙏

मैं संकल्प करता हूं कि यह क्षण से आपका दास हूं 🙏

आपकी हर आज्ञा का क्षर अक्षर पालन करुंगा 🙏

आपके हर मार्ग पर मैं स्वयं को शरणागत करता हूं 🙏

जगत के हर दोषों का निवारण करके आपश्री चारितार्थ दिशा निर्देशक पर न संशय - न आवेग - न अपेक्षित कोई विचार और व्यवहार करुंगा 🙏

आपके सानिध्य में मेरा तन मन धन और जीवन 🙏

मेरो तो आधार श्री वल्लभ के चरणारविन्द 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर एक व्रज परिक्रमा वासी को मेरा दंडवत प्रणाम 🙏

" व्रज परिक्रमा "

हे सखी! चलो री

हे सखा! चलो रे

व्रज रज छूते छूते चलो री

व्रज रस पीते पीते चलो री

श्री यमुना घाटे श्री वल्लभ बैठके

श्री यमुना तटे श्री व्रज मंडले

मन विशुद्धे चलो री 🙏

तन पवित्रे चलो री 🙏

श्री द्वारकाधीशे श्री गोकुलनाथे

श्री ठकुराणी घाटे श्री प्रथम बैठके

दंडवत करने चलो री 🙏

झारीजी भरने चलो री 🙏

श्री कृष्ण लीला भजे श्री कृष्ण रंग पाएं

श्री यमुना पूजन करे श्री यमुना पान करे

श्री कृष्ण शरणं चलो री🙏

श्री यमुना शरणं चलो री 🙏

प्रथम दिन व्रज परिक्रमा 🙏

सर्वे वैष्णव वचनिय को नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

हमारी मान्यता है कि " व्रज परिक्रमा " हमें करनी चाहिए 🙏

मान्यता से हम

१. इतना पैदल चलेंगे

२. इतनी सेवा करेंगे

३. इतना भोग धरेंगे

४. इतना अभिषेक करेंगे

५. इतना दान करेंगे

६. इतना नियम लेंगे

७. इतना दर्शन करेंगे

८. इतना स्नान करेंगे

९. इतना पान करेंगे

१०. इतना कष्ट उठाएंगे

११. इतनी लीला लुटेंगे

१२. इतना व्रत रखेंगे

१३. इतना दंडवती करेंगे

आदि आदि और आदि 🙏

आप और हमने कहीं बार श्री कृष्ण की बाल लीलाओं की वार्ता कहीं बार सुनी, देखी और समझी, शायद कहीं बार चरित्र निभाएं भी है🙏

एक अनोखी रीत कहूं

" व्रज परिक्रमा " में स्व को गोपी हो जाना है 🙏 बस

गोपी हो भये जन्म जीवन सफल हो गये 🙏

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

अवश्य यात्रा में जुड़ना है

अवश्य यात्रा में शामिल होना है

अवश्य यात्रा में अपना मन जगाना है

अवश्य यात्रा में अपना मन संवारना है

अवश्य यात्रा में अपना मन परिवर्तनना है

अवश्य यात्रा में अपना मन पुष्टिमय धरना है

अवश्य यात्रा में अपना मन शरणागत होना है

संभल संभल कर हमने हमारा मन संसारी बनाया

समझ समझ कर हमने हमारा मन जागतिक बनाया

अब

पुष्टि पुष्टि कर हमारे हमारा मन पुष्टि सिद्धांत बनाना है

जी लिया है अब तो संभलना ही है

यात्रा करके मन मोड़ना है 🌷🙏🌷

जितने कदम उतनी डगर पर मेरा " दंडवत प्रणाम 🙏"

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
कैसे आऊं रे कन्हाई तेरी गोकुल नगरी
बड़ी दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
जल भरने आऊं निरखुं गोकुल नगरीयां
जल भरने आऊं कान्हा
निरखुं गोकुल नगरीयां
निरख निरख बहें आंसू की लड़ियां
निरख निरख बहें कान्हा आंसू की लड़ियां
कैसे चले कदम प्रेम डगरिया
बड़ी दूर नगरी
दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
कैसे आऊं मैं कन्हैया तेरी गोकुल नगरी
बड़ी दूर नगरी
गौरस बेचने जाऊं पहुंचुं मथुरा नगरीयां
गौरस बेचने जाऊं कान्हा
पहुंचुं मथुरा नगरीयां
कान्हा लो कोई कान्हा लो साद पुकारैया
हंस हंस कर सब करें मोरी मश्करी कन्हैया
कैसे भूलु मैं अपनी प्रेम मधुरीयां
बड़ी दूर नगरी
दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी गोकुल नगरी
बड़ी दूर नगरी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"લહેર કરવી "
જબરદસ્ત વાક્ય છે 🙏
આજકાલ કોઈ કોઇની જોડે હોય
આજકાલ કોઈ કોઇની સાથે વાત કરતા હોય
અરે! તમે તો આમ અને તેમ
ઓહહહ! તમે તો આખી જિંદગી શું કર્યું અમે જાણતા નથી!
ભાઈ બહું બહું!
હવે તો કરો જલસા 🌷
દીકરી પરદેશ - દિકરો કમાય તો હવે તો તમારે લીલા લહેર 🌷
વહુ રમઝણી 👍
હવે તમારે કરવાનું શું?
કોણ બોલે છે?
કોને કહે છે?
હાં! તમે જ મારું ભલું ઈચ્છો છો
હાં! તમે જ મારૂં સારૂં વિચારો છો
ચોક્કસ! ચોક્કસ! 🌷 🙏 🌷
ધન્યવાદ 🌷 🙏 🌷
એકલા વિચારીએ 😢
હાં! હાં! બહુ કર્યું
હવે શાંતિ થી જ જીવવું અને મઝા જ કરવી
ત્યાં જ ઘડિયાળ બોલી
અરે દવા લીધી! પ્રેશર ની - સુગરની!
લાવ લઈ લઉં 😮
અરે! આ ઘુંટણ નો દુઃખાવો
આ આંખ નો મોતિયો
આ દાંત નું ચોક્કું
આ કાન ની બહેરાશ
વિગેરે વિગેરે વિગેરે
ત્યાં ફોન રણક્યો
એલાઉ! આજે આપણે સિનેમા જવાનું છે એટલે બહાર ખાઈશું 👍
અરે પણ ગયા મહિને તો ચાર પિક્ચર અને છ વખત હોટલમાં ગયા તો હતા
આ વારંવાર શું?
અરે તું ચિંતા કેમ કરે છે?
આજે પૈસા નહીં વાપરીએ તો ક્યારે વાપરીશું?
તું તૈયાર થઈ જજે! 🌷
અરે પણ પેલા દાંત નાં ડૉક્ટર ની એપોઈન્મેન્ટ લીધી છે
અરે કેન્સલ!
કાલે જઈશું

" व्रज परिक्रमा "

श्रद्धा और विश्वास कि अनोखी बुनियाद - व्रज परिक्रमा 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे श्री आचार्य अचल शिष्यार्थी की टेक - व्रज परिक्रमा 🙏

श्री यमुनाजी हमारी पुष्टि धात्री वात्सल्य शरणागत की विवेकी - व्रज परिक्रमा 🙏

श्री गिरिराजजी हमारे रक्षक वीर भक्ताभिलाषी रामारसस्पर्शकरप्रसारी की कृपा - व्रज परिक्रमा 🙏

श्री श्रीनाथजी हमारे परम प्रेमी का अमृत लीला रंग - व्रज परिक्रमा 🙏

श्री वैष्णव हमारे पुष्टि प्रदीप्त दीप प्रक्टायक का प्रकाश - व्रज परिक्रमा 🙏

🌷🙏🌷 व्रज 🌷🙏🌷 परिक्रमा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

एक एक के मुख पर आनंद है

एक एक की गूंज में " श्री कृष्ण: शरणं मम " है

एक एक के नैनों में दर्शन है

एक एक की द्रष्टि में " जय श्री कृष्ण " है

एक एक के कदम पर व्रज रज है

एक एक के शरण में " दंडवत प्रणाम " है

एक एक के अंग में पुष्टि बल है

एक एक के रंग में " श्याम सुंदर श्री यमुना महाराणी " है

एक एक के पुरुषार्थ में निरपेक्ष भाव है

एक एक की नीति में " जय जय श्री वल्लभ " है

एक एक की धड़कन में प्रेम है

एक एक की रीति में " जय जय श्री राधे " है

हमारे मुख श्री वैष्णव जन वैष्णव:

हमारे नैन श्री श्रीनाथजी श्री नाथ:

हमारे कदम श्री गोवर्धन गौवर्धन:

हमारे रंग श्री यमुनाजी श्री यमुना:

हमारे संग श्री वल्लभ श्री वल्लभ:

हमारे दिल में श्री राधा श्री राधा:

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रेम की धारा न कभी रुकती है और न कभी तुटती है

अविरत बहती यह धारा में जिसने डूबकी लगाया

वह कभी तैरता नहीं है और वह कभी किनारे पर नहीं आता

जो डूब गया वही पार लग गया और जो नासमझ पाया

वह भटकता गया विचलित गया बिछड़ता गया

राधा कृष्ण के प्रेम में एक घड़ी न कोई विचलित हुआ न कोई भटका न कोई बिछड़ा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर चढ़ा दो

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर संवार दो

ख्यालों से ख्याल बढ़ते है

यादों से याद जगती है

जब यह नैनों की नजरों में

प्रिये की तस्वीर उठती है

तो दिल पर प्यार बरसता है

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर संवार दो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - व्रज परिक्रमा

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507